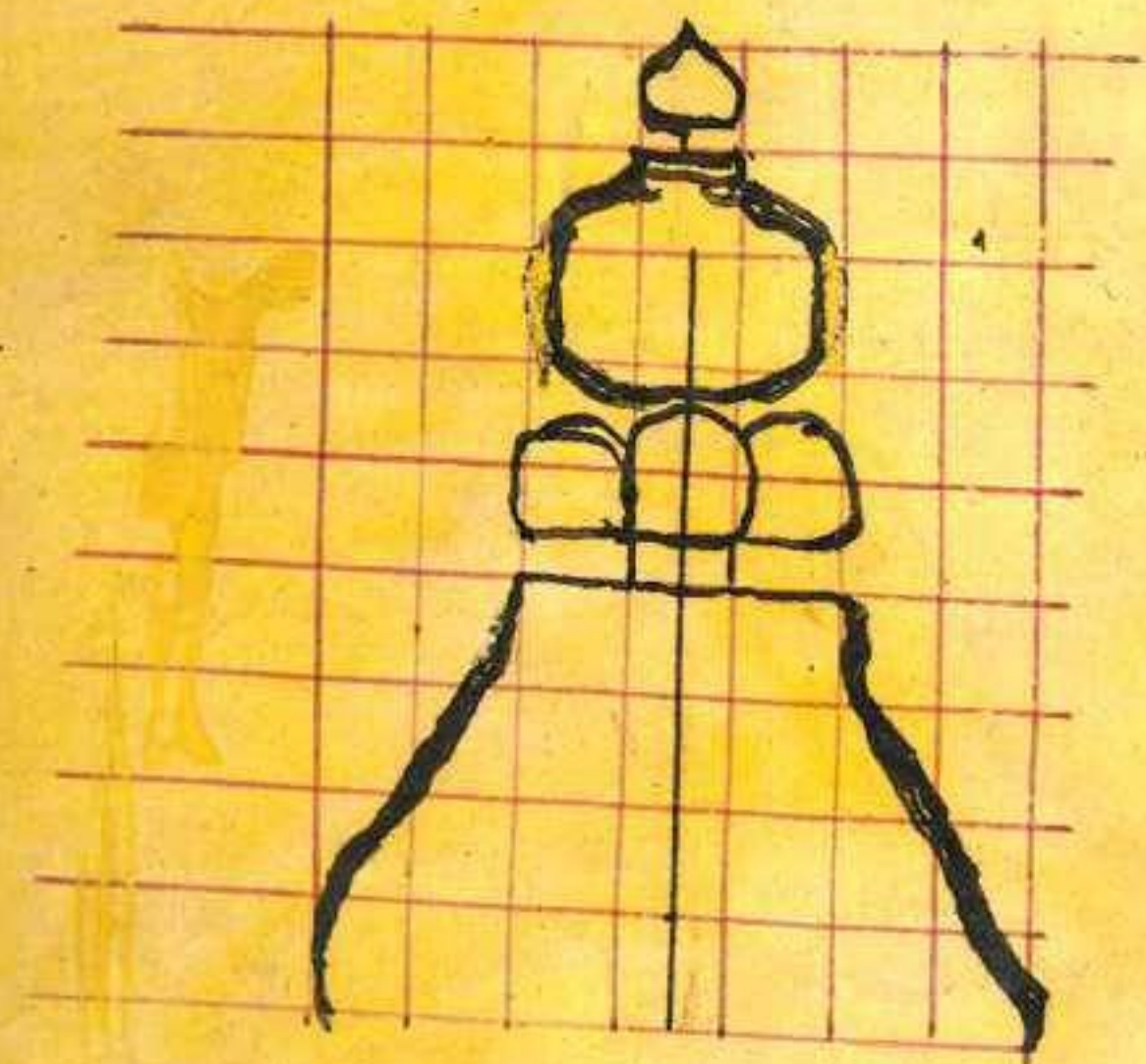
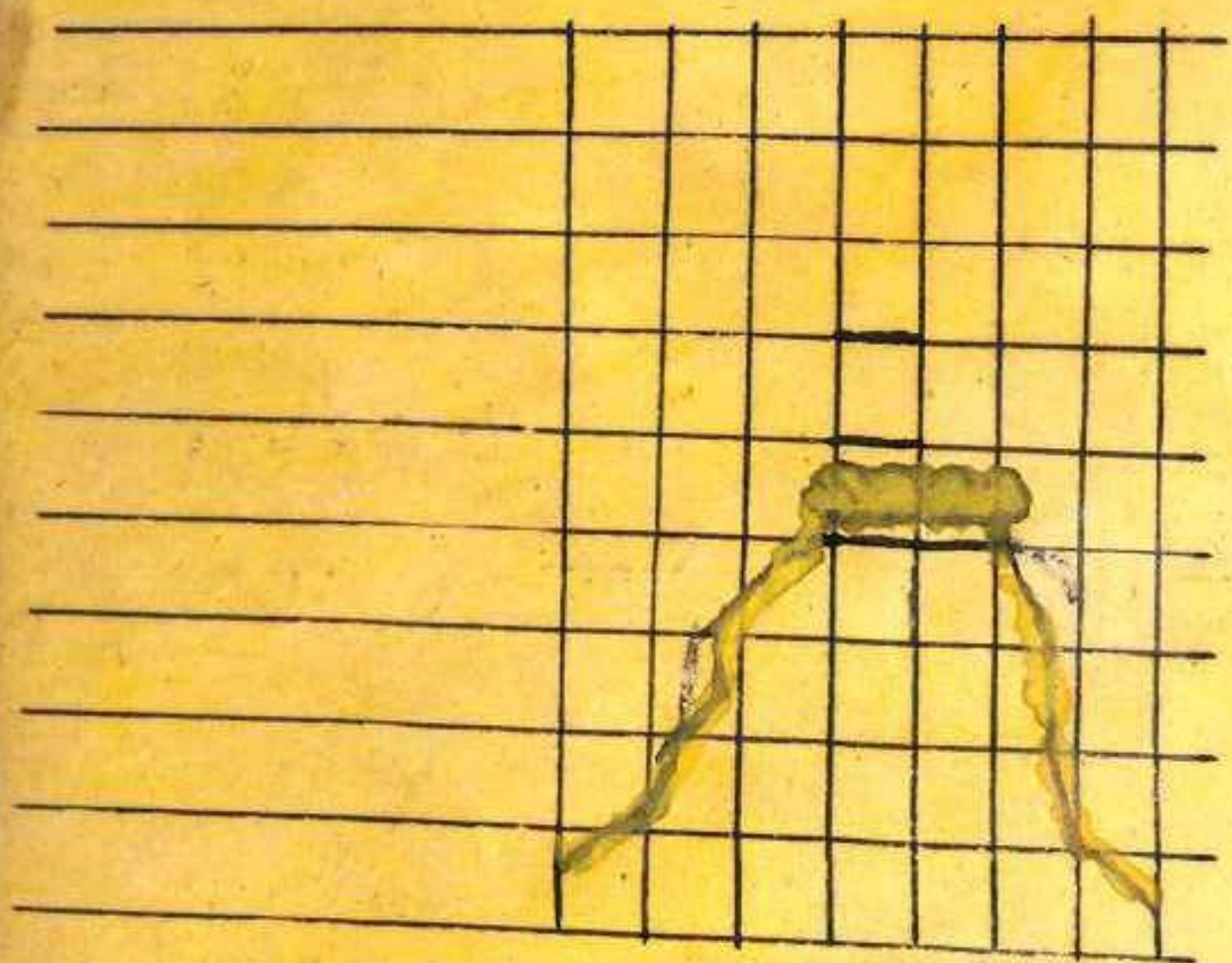


૧૪ લિલ્લુભા આલોર પાટા લિ.૩

૧૫

ASHA ARCHIVES

૩૫૫૨



२ सधुभाति ४ लिनाक्षर्य निधुभा मधुभा नवच । ६ लाक ८ एवे ल १० का छ ले न स्थ ना सिका ११ अग्नि न्नी लोथे १२ छरु टिक
 १३ निरु १४ गन्म र्वी नस्य विद्वय व ए न तु ले मान रु १५ ॥ वक् १६ लि न सि ना सार्था १७ य स्व नि धु वा रु थ १८ श द वा से रु मा डि
 १९ न द म नि वि ना न थ ग ॥

अ	उ	क	व	रु	घ	ग
म	रु	व	रु	घ	ग	अ
म	रु	व	रु	घ	ग	अ
रु	स	ष	न	क	ख	रु
व	ष	न	क	ख	रु	रु
थ	द	प	क	ख	रु	रु
डा	डो	झ	क	ख	रु	रु
म	म	रु	व	रु	घ	ग
अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ

२ सायाक ३ लिनी क्रिया मधुमगी काली कलामालिनी मागझी विजया रुया रुमवणी भवो निवाभ रुवी ११ कि १२ क न व ल रु प्रि न य ना वा म्म दि
 नी रु न वी रु का नी वि धु ना य ना म न म यी मा गा कू मा नी ए सि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुम
गाहा नाग यक्ष विधिलिख्य ॥ पागला
नादिनिख कर्मकृत्वा यक्ष मधुर्नृप
दिग्धक्षुस्त्रिवाचमग ॥ यज्ञमान ॥ ७
अथादि ॥ सुव्याधि ॥ वोक्त्वा ॥ यज्ञमानस्य
प्रीतिं प्रमूक विष्णुस्त्राय न निमिह ॥ अ
वाच्य ॥ दमायनादि पांथ दद्यात् ॥
आवाच्य ॥ सुव्याधि गुन नमस्कारं न्योसा
ध्यायं च कृत्वा बलिद्वयं दद्यात् ॥ गुरु
नामा कृत्वा गव वदू क कृत्वा हृत्कृत्वा
युना क ॥ अग्निजिह्वा काला क कलानन
एकपाद शीमन्त्रयक ॥ अर्गुकादयः
अलिगाह नृन् वधु काध उमरु क
पालीशीषण संज्ञान ॥ अर्गुलिगाह दः
यः ॥ वक्राणी माहृषी कोमानी वेष्टुवा
वावाही ॥ सुव्यादी वा प्रभु मरुतस्त्रा
॥ अर्गुवक्राधयः ॥ अर्गुवावलिदद्यात्
॥ नवात्मा ॥ कृपाग ॥ ॐ श्रीं नृसिंहाय
वलिं गुरु २ स्वाहा ॥ कृपाग ॥ ॐ विश्व
क्षनाय वलिं गुरु २ स्वाहा ॥ ॐ ममयाय
नीर्गय धूय दीय यूजा वलिं गुरु २ स्वा
हा ॥ वद ॥ ॐ शुर्ग शुर्ग ॥ ॐ विष्णु वनाठम

प३

सि ॥ ॐ नमो नाना ॥ ॐ नमो वसुधाय ॥ ॐ
अमु अक्षिक ॥ ॐ विश्वग धृत्तुग ॥ ॐ
पार्थ दिग्ग स्वाहा ॥ धूय दीय यूजा य प्रार्थी ॥
सर्वकृपा धिनार्थं वदू कम पिकर्तं निष्क
र्तं निष्कर्तं गं लं लं लं कानवीर्जं किं किं क
लिगधनं गत्व नृप स्व नृप ॥ विश्व स्व वा
नृका संरुलि गल नमिर्गं नृवर्गं नृमा
मि वदू हं नृवाची यल मग सगर्गं
नृवर्गं गया लं ॥ अर्गुग धादि ॥ बलिवि स
ऊर्न ॥ नाव सिंह वलिं मधुर्पंगु मयग
विश्व स्व न वलिं स्व न किधग ॥ ॐ गिव
लि विधि ॥ ॥

आवाच्य न्यासं कर्ष्यात् ॥ वीहि नृजसस्य
यं पृत्वा ॥ द्वा नम मधुर्पंगु ॥ ॐ आका
शानम ॥ दिशु यूर्य किं स्वा ॥ ॐ गवय
गय नम ॥ ॐ उर्ध्व उर्ध्व मिलिक ॥ ॐ मन
स्वस्थ नम ॥ दक्ष ॥ ॐ द्वा न प्रिय नम ॥
मधु ॥ ॐ विजया येन म ॥ दक्ष ॥ ॐ विज
या येन म ॥ वाम ॥ ॐ दक्ष येन म ॥ दक्ष
र्या ॥ मूलना वला क ॥ ॐ दक्ष को धन ॥ ग
गा ना ना वमूदया ॥ सुमं कुल वीहि नृजस

सुनिवर्गाय

धर्मप्रियं ॥ यद्गुरुमहर्षिं प्रविश्यादक
 पादार्घ्यं दत्त्वा ॥ उं यागात्तस्मिन्नायं च
 उविदिद्या कविकुम्भः विद्युक्कलनाय
 कुनास्तनः ॥ उं त्वय्युगास्तु ॥ उं वीर
 यश्चमः ॥ ॥ दहत्यामस्तु कलर्ग्युक्तय
 नः ॥ उं अस्तु यः दमासर्गनमः ॥ ध्यानं
 ॥ पद्मासनं कवकाचं रुमवत्सुखं यो व
 ना ॥ सद्यस्तु ध्यायन् वा भगवन्तुनीं
 विष्णुं ॥ निर्विघ्नं यस्तु कार्यार्थं गच्छति
 ध्यायन् सदा ॥ उं नरकाहर्नः ॥ सुखं ॥ ग
 र्जनी हरुस्तु कस्तु रुमस्तु यमस्तु रुम
 । सर्वविघ्नं कृत्यार्थं अस्तु मूर्तु नमः
 सुखं ॥ ॥ निदानयागः ॥ ॥

रक्तः ॥ यस्तु गवसाधनं ॥ यागद्वयं न
 नवकाष्ठं विलिख्य ॥ उं अथादि ॥ पुत्र
 नमस्तु नः ॥ न्यासः ॥ यस्तु दधि ॥ उं उमा
 पतिदवगाय नमः ॥ उं दधिकाया ॥ ॥
 दक्षिणः ॥ गमस्तु ॥ उं वद्विदवगाय नः
 मः ॥ उं गमस्तु ॥ ॥ यत्वि
 मं कीर्तनं ॥ उं सामदेवगा
 येनमः ॥ उं ययः ॥ यि
 यः ॥ ॥ उरु ॥ ॥

काल	दधि	गम
दक्ष	वृक्ष	मय
दक्ष	वृक्ष	मय
गम	काल	मय

उं रास्तु नदवगाय नमः ॥ उं गजासि ॥
 आनयः ॥ गमस्तु ॥ उं सदानिव
 यलिंगं मूर्तुय नमः ॥ उं लिवा नामासि
 ॥ नमस्तु यस्तु राज्ञः ॥ उं गीदवगाय
 नमः ॥ उं गीदवगाय ॥ उं याः ॥ रुलिनी ॥ वाय
 यः ॥ गमस्तु ॥ उं उनादनदवगाय नमः
 उं गमस्तु ॥ ॥ गमस्तु ॥ गमस्तु ॥ उं
 वरुणदवगाय नमः ॥ उं वरुणस्तु
 रुनमसि ॥ मः ॥ वरुणस्तु ॥ उं वरुण
 वगाय नमः ॥ उं वरुणस्तु ॥ गमस्तु
 उयः ॥ १०८ ॥ दक्षिणः ॥ दक्षिणः ॥
 निक्षेपमिष्टयः ॥ उं सर्वयामि ॥ आः
 लाउर्नः ॥ उं उनयस्तु ॥ ॥ गिरगर्क
 यः ॥ दवानिर्दुयेमानानी ॥ गमस्तु
 लिंगयुजा ॥ स्नानचन्दनसिन्दूरयक्षाय
 वीगयस्तु दक्षिणस्तु धूपदीप ॥ यदः ॥
 उं लिवा नामासि ॥ सुखं ॥ गमस्तु लिंग
 न्यायस्तु दध्याय नालिनः । सर्वदह
 पविणाय गत्व न्याय नमः ॥ अस्तु
 गंधादि ॥ ॥ अस्तु ॥ दियस्तु मानस्तु
 यस्तु गवसाधनं ॥ उं वाचं गस्तु ॥ मि ॥
 यागर्नः ॥ उं मनस्तु ॥ अस्तु ॥ अस्तु ॥

ॐ त्वमग्नेयुरि ॥ ॥ गच्छ यथायति
 सार्थं पंचगव्यालं गच्छ कलं गच्छ ॥
 ॐ गियञ्च गव्यासाधन विधि ॥ ॥

गच्छ यथायति ॥ न न वकाष्टं लिखित्वा
 नैर्भयका ॥ लिखित्वा न ववर्तिदया ॥
 न्यासादि ॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं दीयाय व
 लिङ्गं कुरु स्वा ॥ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं
 कं कलं दीयाय वलिङ्गं कुरु स्वा
 स्वा ॥ अग्नेय ॥ ॐ ह्रीं चं गच्छ दीया
 यदीयाय वलिङ्गं कुरु स्वा ॥ द
 कि ॥ ॐ ह्रीं ॐ गच्छ दीयाय वलि
 ण्गं कुरु स्वा ॥ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं गं नागदीया
 य वलिङ्गं कुरु स्वा ॥ वा ॥
 ॐ ह्रीं यं सोमदीयाय वलिङ्गं कुरु स्वा
 स्वा ॥ वायव्य ॥ ॐ ह्रीं यं गच्छ दीया
 य वलिङ्गं कुरु स्वा ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं
 गं वायव्यदीयाय वलिङ्गं कुरु स्वा स्वा
 ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं ॐ कोमानदीयाः
 य वलिङ्गं कुरु स्वा ॥ म ॥ ॐ
 वं वकाष्टं दि ॥ अग्निगच्छ दि ॥

हृत्कादि ॥ वद ॥ ॐ गच्छ नात्वा ॥
 ॐ अग्नेयुरि ॥ ॐ विष्णुगच्छ रुद्रग ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं ॥ ॐ अग्नेयवदधि ॥ ॐ उ
 हायिव ॥ ॐ अग्नेयवदधि ॥ ॐ नमा वद
 गच्छ ॥ ॐ नमा सुसध्य ॥ ॐ यदीय
 जायका ॥ ॐ ह्रीं दीयाय कलं गच्छ नात्वा
 ॐ गच्छ नात्वा ॥ नागदीयाय रुद्रा सोम
 गच्छ वदधि वायव्य ॥ अग्नेय वदधि
 दीया कोमानदीयाय रुद्रा ॥ अग्नेय
 दि ॥ न्यासादि विधि ॥ ॐ नक्रियत्वा

गच्छ रुद्रा मि ॥ अग्नेय ॥ ॐ ह्रीं दीयाय
 नमः ॥ यथायति ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ॐ
 ॐ ह्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं नमः
 नमः ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥
 यथीयक यथीयक ॥ ॐ ह्रीं यथीयक
 हि ॥ ॐ ह्रीं ॥ कलं दकन सिद्धि ॥ ॐ गच्छ
 यामि ॥ यं च गच्छ नमः ॥ ॐ त्वमग्नेय
 अग्नेयवदधि ॥ ॐ ह्रीं वदधि ॥
 नथयुज ॥ ॐ ह्रीं वदधि ॥ ॐ ह्रीं वदधि
 न ॥ ॐ ह्रीं वदधि ॥ ॐ ह्रीं वदधि ॥
 अग्नेयवदधि ॥ ॐ ह्रीं वदधि ॥ ॐ ह्रीं वदधि

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ यत्त्वा मूर्ध्नि निव
 रूपाय मानो न तत्वा वक्षानि स विगासक
 दधाम ॥ अस्मिन् लोकसूक्तं लोकस्वान
 मसहयसा कथामि ॥ ॐ श्री ॥ गान्धि ॥ य
 निष्ठा ॥ ॐ निमलुपविधि ॥ ॥

योगेश्वर ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ द
 कवी हि पूजनं ॥ ॐ गान्धिकाय निवास्तु
 मूर्ध्नि नमः ॥ ॐ श्री हयग्न्यम् ॥ वामला
 जा ॥ ॐ पूष्टिकाय विष्णु मूर्ध्नि नमः ॥ ॐ
 ॐ देविष्णु ॥ मध्यमं मोक्षनी ॥ ॐ सदा
 विष्ट विनाशाय वृद्ध ॥ नमः ॥ ॐ वृद्ध
 यज्ञानं ॥ ॥ श्री हयग्न्यम् ॥ ॐ श्री हयग्न्यम्
 ॥ लाजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति न ॥ ॥ वा
 मरुतं नमिर्विष्णुर्ध्याय च गृहीत्वा कृति
 णरुतं नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 दक्षिणवर्तनमूलकलणयय्यकनय
 न् ॥ ॐ वायुवायाहवीगयद्युगा नाहय
 मागय ॥ यत्रिनायुदस्य धामसू ॥ ॥ गम
 यलिर्नयुर्विष्णुर्ध्याय विष्णुर्ध्याय वि
 नासनयुजा ॥ ॐ नमः ॥ गीरायव ॥ ॥ ॐ
 निमलुपालरुनविधि ॥ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ निवर्तकियुजा ॥ पूष्ट
 लाजनं ॥ सिद्धि नस्तु क्रिया ॥ वाक्कलाय
 पूष्ट लाजनसमयर्ण ॥ नमो मूलकल
 णं मिदं वा मगकिं दुरु विपरीत नव
 नासननयुजयन् ॥ ॐ अथ सादि ॥ गुरु
 नमस्तु ॥ न्यासाय ययुजा ॥ अथ
 पूजा ॥ मूलकलणं गीराय नमः ॥ दकयु
 नयन् ॥ ॐ ॐ मीमं गी ॥ ॐ वृद्धयज्ञा
 नं ॥ ॐ ॐ देविष्णु ॥ ॐ निवा नासासि ॥ ॥
 गान्धिकाय ॥ ॐ अथ अथिक ॥ ॐ याव
 कान ॥ ॐ श्री गान्धि ॥ अथ गान्धि ॥ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पूर्वद्वानं नक्त ॥ ॐ पू
 र्वद्वानाय नमः ॥ न्यासाय अथ ययुजा
 ॐ न्यासाय ॥ अथ नमः ॥ ॐ देवता ॥ अथ
 कर्ण ॥ ॐ त्वम ॥ नमः ॥ ॐ चिकनर्ण ॥ ॥
 ॐ ॐ देविष्णु ॥ ॐ स्थानाय धिवा ॥ ॐ अथ
 वृद्धा नमः ॥ ॐ चत्वा विष्णु ॥ ॥
 ॐ स ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ का
 लायानननाय कस्य वसिष्ठा नमः ॥
 रुधन ॥ गान्धियाय नमः ॥ वननचिः

य

गान

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अष्टांगानि
महामुनिपुत्राणि ॥ संसृजमानाचला
यथाज्ञानं सदास्मिन् विववट ॥ यूवा
चलं तावयन् ॥ उद्वादादवी ॥ स्मृते ॥
पूर्वाद्यानां लिङ्गाणां उदयनिविमहाः
नृकर्मधर्माणां नानापुष्पयुक्ता
जुमनगलनये ॥ काकिलानादनमः ॥
प्रीमान् विस्तीर्णान् वा वदन्तु लव
नवृक्षसंयं किं दत्ता विस्तीर्णानां
वयमि किं नमः ॥ यद्येवमयं नमः ॥
उद्वादाय नमः ॥ ध्यानं ॥ यमस्तु चक्र
यादवी चक्रवक्त्रा चक्रवक्त्रा ॥ वक्र
चक्रवक्त्रं सर्वं च ॥ यमवक्त्रं वनपदा ॥ उ
यमवक्त्रं मनः ॥ स्मृते ॥ यमवक्त्रं चक्रवक्त्रं
द्रव्यवक्त्रं लिङ्गावनी ॥ संयद ॥ सर्वः
दादायी जयादवी नमः ॥ उद्वा
जयाय नमः ॥ ध्यानं ॥ विजया ह्रमवक्त्रं
रागकिं चक्रवक्त्रं तलागदा ॥ एकवक्त्रं
संस्तु च विजया सिद्धिदायिनी ॥ उद्वा
दं विष्णु ॥ स्मृते ॥ ह्रमवक्त्रं ह्रमवक्त्रं
नीचक्रवक्त्रं सूर्यानिनी ॥ सर्वसिद्धि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अष्टांगानि महामुनिपुत्राणि ॥ संसृजमानाचला यथाज्ञानं सदास्मिन् विववट ॥ यूवा चलं तावयन् ॥ उद्वादादवी ॥ स्मृते ॥ पूर्वाद्यानां लिङ्गाणां उदयनिविमहाः नृकर्मधर्माणां नानापुष्पयुक्ता जुमनगलनये ॥ काकिलानादनमः ॥ प्रीमान् विस्तीर्णान् वा वदन्तु लव नवृक्षसंयं किं दत्ता विस्तीर्णानां वयमि किं नमः ॥ यद्येवमयं नमः ॥ उद्वादाय नमः ॥ ध्यानं ॥ यमस्तु चक्र यादवी चक्रवक्त्रा चक्रवक्त्रा ॥ वक्र चक्रवक्त्रं सर्वं च ॥ यमवक्त्रं वनपदा ॥ उ यमवक्त्रं मनः ॥ स्मृते ॥ यमवक्त्रं चक्रवक्त्रं द्रव्यवक्त्रं लिङ्गावनी ॥ संयद ॥ सर्वः दादायी जयादवी नमः ॥ उद्वा जयाय नमः ॥ ध्यानं ॥ विजया ह्रमवक्त्रं रागकिं चक्रवक्त्रं तलागदा ॥ एकवक्त्रं संस्तु च विजया सिद्धिदायिनी ॥ उद्वा दं विष्णु ॥ स्मृते ॥ ह्रमवक्त्रं ह्रमवक्त्रं नीचक्रवक्त्रं सूर्यानिनी ॥ सर्वसिद्धि

पदाजी च विजया च नमः ॥ उद्वा
यवदाय नमः ॥ ध्यानं ॥ उद्वाजी वक्त्रं
चक्रवक्त्रं मकमालासूर्यकं ॥ वन
दारुयहस्तक ॥ यद्येवमयं नमः ॥
वद ॥ उद्वाजी मीठ ॥ उद्वाजी मयन
मः ॥ ध्यानं ॥ गीतस्तुटिक संकां गीत
रुटिक धनिनी ॥ चक्रवक्त्रं सूर्यक ॥ रुच
यमदिध्यायनं सदा ॥ वद ॥ उद्वाजी
नाजा ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
वा ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
द्वी ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
वास ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
॥ ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
गलपयनमः ॥ ध्यानं ॥ एकवक्त्रं
गलपयनमः ॥ ध्यानं ॥ एकवक्त्रं
गलपयनमः ॥ ध्यानं ॥ एकवक्त्रं
वद ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
मः ॥ ध्यानं ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः
गलपयनमः ॥ ध्यानं ॥ एकवक्त्रं
गलपयनमः ॥ ध्यानं ॥ एकवक्त्रं
वद ॥ उद्वाजी मयनमः ॥ उद्वाजी मयनः

पावकान ॥ उं महालक्ष्मी नमः ॥ श्री
 न ॥ उं स्वर्गयन्त्रासनस्तु चक्रं कृमाक
 चक्रं रुद्रा । कलर्गं दय्यर्गं वाङ्मनील
 रुद्रं वृणीरुर्ल ॥ श्रीवभानननृपाः
 गी सवर्तिका लक्षणना । दानाद्वेष्ट
 स्मिताद्वी लक्ष्मी नृपा विविक्तयन् ॥
 वद ॥ उं श्रीभूग ॥ ॥ उं वेदं वृष्टिनेमः
 ॥ उं ॐ दं विष्णु ॥ उं वासुदेवाय नमः ॥
 उं गद्विष्णु ॥ ॥ उं ॐ न्याय नमः ॥ श्री
 नमः ॥ उं सरुमाका गजा वृष्टा वदरु
 स्माचवाकुक ॥ रुमरु ॥ सकिनीरुष्ट
 दवनाक ॥ सुना वृष्ट ॥ वद ॥ उं गान
 नमिन्द ॥ ॥ स्माक ॥ ॐ नृमु मरुगी नाका
 सरुमाका गजासन ॥ वदरु स्मा मरु
 काया नमस्तु पूर्वदिक्क ॥ ॥ उं कृम
 दधजाय नमः ॥ उं अस्माक मिन्द ॥ उं
 यन्त्रवाय नमः ॥ उं अस्माक यन्त्रा ॥ उं
 कृणाय नमः ॥ उं वृष्टयर्गं कृदिनृसि
 ॥ मित्रु ॥ उं यश्च वक्रं स्थानमः ॥ उं य
 वृक्षमृस स्थिश्च ॥ उं ॥ मयाय नमः
 ॥ उं गन्धदाना ॥ उं दृष्टीये नमः ॥ उं

कालुत्कालुत् ॥ उं सर्वपाय नमः ॥ उं ॐ
 मानुदाय ॥ उं यश्च सुगय नमः ॥ उं न
 काहर्ग ॥ उं नकाये नमः ॥ उं त्वय विव
 दा ॥ उं पूर्वदिग्दानदवता स्थो वलिष्ट क्र
 स्वाहा ॥ उं नमः ॥ रुवाय ॥ वन्दनादि
 वलिष्ट निष्ठा ॥ उं सुयनिष्ठा रुव ॥ उं य
 गयका ॥ धूपदीपकाय स्माय ॥ उं महा
 वीथ्यमिहा काय उदयनि महागिनि
 । विठ्ठायाय नमः । नि सर्वदवनमासु
 ग । दवदानवगन्धर्वो यक्रुनाकृसय
 नमः ॥ सर्वममाध्वननरुं नरुं कृव
 लुभसदा ॥ अयं वयं कृव नरुलीय
 ॥ सर्वपिदृष्टा विनियानिथाय । दाना
 दिद्ववस्तिग ॥ नृसर्व नरुं कृव नृस
 स्वदिदि ॥ ॥ अगगन्धदि ॥ ॥ ॐ
 निपूर्वदिग्दानार्चन ॥ ॥

गगादक्रिदिग्दानार्चन ॥ उं दक्रिदि
 दानाय नमः ॥ न्यासार्चयाय नमः ॥ उं न
 त्वायामि ॥ असर्ग ॥ उं दवस्यत्वा ॥ अस्तु
 रुर्ग ॥ उं त्वमन्तुयुक्ति ॥ उं विक्कनृर्ग ॥
 उं ॐ दं विष्णु ॥ उं स्थानादधिवा ॥ उं उद

हन्तः

क॥ वद॥ उं द व हू नो ॥ स्तुत ॥ कृष्णः
 प्रसूतासीनस्वर्ग रुद्रक धनक । विष्णु
 मर्दय मर्दक य व लु य न भो मुन ॥ ॥ उं
 य रु द्र दाय न म ॥ ध्यान ॥ ॥ व ग व दू य
 रु द्र दं व रु द्र दं स र ॥ रु न । अरु मा ल
 विदुषी व वा र्ण व ध नू ॥ रि नी ॥ वद ॥
 उं ॥ वृत्ता ॥ ॥ उं ग ना यू ग य न म ॥
 ध्यान ॥ उं रु म व रू नि रु द्र व र्ण व पि
 ध नू रु था ॥ ग दा च क ध नू रु रू ण गा या
 धिय नि य ज नू ॥ वद ॥ उं अरु ना जा ॥
 उं वृ धा य न म ॥ उं उ दू ध स्वा ॥ उं उ
 रु स्य न य न म ॥ उं उ रु स्य न अ नि ॥ ॥
 उं वा सा य न म ॥ उं य स्य कू र्मा ॥ उं रु
 नू म न म ॥ उं गी द्रा नू द्या वान् ॥ उं न म
 दाय न म ॥ उं अया द वी य नि रु री न
 ग म्भे न स्थान क वृ ध ॥ सु ल रु ड ला
 क । ग म्भे न म कां उ न य स्र प त्री मा नि
 व यू रू वि रु गा य न नू ॥ ॥ उं स न य न
 म ॥ उं यु ग न गी ग म धू ना स म अ र्गिः
 वि ॥ वे द वै व म ॥ ग म नू दि ॥ उं रु स्त
 गी य य सा यि च मा ना स्मा स्ती न य व साः

ॐ गणेशाय नमः ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥ ॐ
 गणेशाय नमः ॥ ॐ सनत्कुमाराय नमः ॥ ॐ या
 वकान ॥ ॐ महालक्ष्मणे नमः ॥ ॐ श्री
 ॥ ॐ संकराय नमः ॥ ॐ श्रीवक्त्र
 ॐ ननसिंहाय नमः ॥ ॐ विष्णुनाथ
 मसि ॥ ॐ यमाय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ
 षष्ठीनाय नमः ॥ काथ्यादिलुहस्यारुय
 कन ॥ नकरुह्यागुरुत्तुष्टामहिवस्तु
 ॐ यदुगवान् ॥ वद ॥ ॐ यमनदरु ॥ सु
 ॥ रुगान् रुष्टुगान् रुष्टुगान् रुष्टुगान् रुष्टु
 कन ॥ महिवस्तुमहावीथानिमस्तुद
 क्रिगदिक्रिग ॥ ॐ यूगुनीकध्वजायः
 नमः ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ यन्त्रवाः
 यनमः ॥ ॐ अश्विस्तु ॥ ॐ रुगाय नमः ॥
 ॐ वृहस्पतिस्तु ॥ ॐ दिवसि ॥ ॐ रुग ॥ ॐ य
 ॐ वक्राय नमः ॥ ॐ यष्टरुष्टुसर्षि
 जना ॥ ॐ गमयाय नमः ॥ ॐ गन्धदा
 ना ॥ ॐ द्रव्याय नमः ॥ ॐ काष्ठाला
 रु ॥ ॐ सवर्षाय नमः ॥ ॐ रुमात्रुदाय
 ॥ ॐ यष्टरुष्टुगान् यनमः ॥ ॐ नक्रान्
 ॐ नक्राय नमः ॥ ॐ त्वयि विष्टदा ॥

ॐ दक्षिणदिग्दानदवाग्रायावलि
 ॐ २ स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ यागत्रुदगि
 वा ॥ चन्द्रनादिवलिप्रतिष्ठा ॥ ॐ सु
 यनिष्ठारुव ॥ ॐ यग्यका ॥ धूपद
 यज्ञायस्तु ॥ ॐ महावीथानिमहोका
 यकिनाम्नसमयुक्त ॥ गुरुदान
 स्त्रिगैलेलेकेलागस्तुष्टुगान् रुन ॥
 देवदानवगंधर्वा ॥ अयं वयं रुस्तु
 व ॥ अयं गंधर्वादि ॥ ॐ निदक्षिणदा
 नाचर्चन ॥ ॥

गगनयन्त्रिमदावाचर्चन ॥ ॐ यन्त्रि
 मदानाय नमः ॥ न्यासाद्युपाययुक्ता ॥
 ॐ गलायामि ॥ आसन ॥ ॐ देवस्येत्वा
 ॥ अश्वरुणी ॥ ॐ त्वमग्नेयुक्ति ॥ ॐ रुचि
 कर्त्तु ॥ ॐ ॐ द्रविष्टु ॥ ॐ स्थानाय
 विवीना ॥ ॐ वष्टरुष्टुगान् वल्लय नमः ॥
 ॐ यत्नाविष्टुगान् ॥ ॐ सुकर्मदानायः
 नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ जायन्तु कुरुग्राहि
 नास्तुहियगवस्तुवलाय महानदा
 लायन्तुगान् विष्टुसकलायदेः

यमानः सदा । पाषाणमणिः ॥ यः
 समस्तमणयैर्दूर्यन्तलथाना
 नादानवरुणगुह्यकजनालीलाः
 स्मितायस्त्रिम ॥ वद ॥ उं दानादवी
 ॥ स्मृ ॥ रागवानुमलुननिनि
 वलीविलीनूडद्योयकः ॥ पाषाण
 मणिमहायनगवः ॥ स्वयम्भूमाः
 यमिनिविः ॥ स्मितावाचलदेवदानव
 गलेनिर्यसदासयागनानाकृष्टिमः
 ॥ स्मितायिसकलंस्मितावलंगनमः ॥
 ॥ उं धात्रीनमः ॥ ध्यान ॥ एकवक्त्रा
 सयीगीगीयद्रस्तावककुञ्जः । पाषा
 णमणिकवक्त्रावधायीगमनियदायिः
 नी ॥ वद ॥ उं विष्णुर्लोक ॥ स्मृ ॥ यी
 गवन्विवृष्टाः ॥ सर्वलोकालरुषि
 गा ॥ सर्वगमनिकनीयवीधायीवैवः
 नमः ॥ स्मृ ॥ ॥ उं विधात्रीनमः ॥ ध्य
 न ॥ उं कमलासनाचरुष्टाः ॥ ध्या
 यगदरुया । विधात्रीकृष्णमाणाद
 वीयुष्टिप्रदायनी ॥ वद ॥ उं दिवावाः
 विष्णु ॥ स्मृ ॥ कमलस्तुस्त्रवासीनाच

उरुकाधजारुया । कृष्णमायुष्टिदादवा
 विधात्रीवनमोक्तुग ॥ ॥ उं सामवदाय
 नमः ॥ ध्यान ॥ बालस्तुष्टिप्रमसामयस्त्रि
 मयुविहावयग । ब्रह्मकवगिदलुवज्र
 रुमाताकमलुर्ल ॥ वद ॥ भूग्नभूयाहि
 वीगय ॥ ॥ उं दायनयुगयनमः ॥ ध्य
 न ॥ उं दूष्टमिनकटवल्गुगदीकृष्ण
 विधाविर्ग । यद्यर्गस्वधुर्नदर्वदायनाः
 धियनिस्मयग ॥ वद ॥ उं अरुनाजाय ॥
 उं लुकायनमः ॥ उं अन्नात्यनिधुगा ॥
 उं गनेत्यनायनमः ॥ उं गनोदवी ॥ ॥ उं
 विहायनमः ॥ उं नरुसांरागासि
 उं कयायनमः ॥ उं युजायनमः ॥
 उं गलुक्केनमः ॥ उं समुद्रत्वा नमना ॥
 उं कोलिकेनमः ॥ उं नदीरुथोक्ति
 उं गलयनमः ॥ उं गलानांत्वा ॥ उं स
 नस्त्रयेनमः ॥ उं यावकान ॥ उं महाल
 स्त्रेनमः ॥ उं धीप्यग ॥ उं यद्यन्नायन
 मः ॥ उं विष्णुर्लोक ॥ उं कविलायनमः
 उं रूवावगी ॥ ॥ उं वनूलायनमः ॥
 ध्यान ॥ उं कमलस्तु ॥ स्मिता ॥ सोम्या

गहस्ता महावल ॥ सर्वा लंका वर्य
 यूक ॥ यस्मिन् दिक्क गनम ॥ वद ॥ उं
 ॐ मम वरुण ॥ कृणु ॥ वरुणं गमधव
 ला जिष्णु ॥ यो गहस्ता महावल ॥ सर्वा
 लंका वर्य यूक ॥ यस्मिन् दिक्क गनम ॥
 उं गंखु कर्ण धजा यनम ॥ उं अस्माक
 मित्य ॥ उं यत्न वायनम ॥ उं अश्वत्थ
 वा ॥ उं कृणु यनम ॥ उं वरुण गेक
 दिवसि ॥ निवृज ॥ उं यं ववका यनम ॥
 उं यं वरुण गेक ॥ उं गमयाय
 नम ॥ उं गंधदानी ॥ उं दूधियेनम ॥
 उं काकुलाकुला ॥ उं सर्वयायनम ॥
 उं ॐ मानुषाय ॥ उं यं वरुणायनम ॥
 उं वरुण हर्न ॥ उं वरुणायनम ॥ उं त्वय
 विठदा ॥ ॥ वलि ॥ उं यस्मिन् दिग्दान
 दवगा र्था वलिं कृ २ स्वाहा ॥ वद ॥
 उं सशो जागा ॥ वरुणा दिवलिपनिष्ठा ॥
 उं सुप्रतिष्ठारुव ॥ उं यं यन्का ॥ धूपदी
 यजाय कृणु ॥ उं महावीर्या महाकाय ॥
 सुवर्णसदृशं शक्ति ॥ गृह्णातस्मिन् लो
 लं गंधमादनं गमिर्ग ॥ दवदानवर्ग
 धर्मा ॥ अर्यवयस्कृववकृणीय ॥

अयं गंधादि ॥ ॥ ॐ गि यस्मिन् दिक्क
 वनविधि ॥ ॥ ॥

गहस्ता महावल ॥ उं उरुवदना
 यनम ॥ न्यासाद्ययाय यूजा ॥ उं गत्वा
 यामि ॥ आसने ॥ उं दं वस्यत्वा ॥ अश्वत्थ
 र्ण ॥ उं त्वमग्ने दूहि ॥ उं विकनर्ण ॥
 उं ॐ दं विष्णु ॥ उं स्थानाय धिवा ॥ उं य
 कृणा वलयनम ॥ उं वत्ता निर्गम ॥
 उं प्रहाय दानायनम ॥ ध्यान ॥ धीमा
 न्यधी नदिना जाहिमकनकमथा दधुरु
 ग ॥ यथिर्गमिन् गमिन् धिजागा उरुग
 वयं गदा वरुण गमिन् ॥ समन्त ॥ नानाः
 यक्रा गमनां विलसतु शुवर्न किन्नरा
 र्णां विलासा निर्यसेस्मानरुमिर्यजन
 विधिवत्सु वयं दीदृशं कं ॥ वद ॥ उं
 दानादवी ॥ कृणु ॥ धी लिलय समन्तः
 नाम हि मरुत्सर्वे सिद्धा तथा नाना
 वक्रसमाकृता नि कनकं खनी सना
 सर्वे ॥ नारायणं नमो नमो नमो नि
 वये ध्यातु ॥ गिलासर्वे ॥ सो यं यच्च

गणेशनामसिन्धुसर्वदसदाहृदि
 ना॥ ॐ विश्वकर्माय नमः॥ ध्यान
 ॥ एकस्मिन् धामवर्त्मनि विश्वकर्मा
 कर्मस्तिर्ग॥ गदाचक्रासिर्गर्भव
 कसिद्धिरुत्पद्य॥ वद॥ ॐ प्रहृदि
 ध्रु॥ स्तुत॥ धामवर्त्मनि महाकाय ग
 दाचक्रासिधविर्ग॥ ॐ कसिद्धिप्र
 दागता विश्वकर्मा नमोऽस्तुते॥ ॥
 ॐ कृष्णाय नमः॥ ध्यान॥ ॐ एका
 स्मिन्कविलिङ्गो देवमूलखट्वाङ्गधाविर्ग।
 खड्गसिन्धुधर्मकर्म अकस्म्यस्तु सिद्धि
 द॥ वद॥ ॐ विश्वाननात्मसि॥ स्तुत॥
 सिन्धुविर्गल्लोकोदनीलाङ्गनसमय
 रु॥ यस्तु सिद्धिप्रदागता नृकृष्णाय नमः
 नमोऽस्तुते॥ ॐ अथर्ववेदाय नमः
 ध्यान॥ ॐ अथर्वकृष्णवर्त्मनि स्वप्न
 रुत्कधाविर्ग। नत्तयष्टकहस्तवः
 उरुनयुविचिकथन॥ वद॥ ॐ गीता
 दवीति॥ ॐ कलियुगाय नमः॥ ध्याः
 न॥ ॐ कलिककालवर्त्मनि स्वप्नमैकः
 गुरुकथा॥ मनिर्गखसुधागुरुकः
 लिमूर्तिविरावयन॥ वद॥ ॐ अकृष्ण

[illegible]

ॐ वाम मय ॥ २

ॐ बृहस्पते नमः ॥ ति वृज ॥ ॐ
 पंचवक्त्रं स्थान ॥ ॐ यं वृक्षं वृक्षं
 रुना ॥ ॐ (ममयाय नमः ॥ गंधदानी ॥
 ॐ दृष्टीये नमः ॥ ॐ काण्डात्काण्डात् ॥ ॐ
 सख्ययाय नमः ॥ ॐ ॐ मानुषाय ॥ ॐ
 पंचसूत्राय नमः ॥ ॐ वक्राहर्त ॥ ॐ न
 काये नमः ॥ ॐ त्वय विष्टया ॥ बलि ॥ ॐ
 उरु नदि द्वा नद व ग स्था वलि ॥ ॐ २
 स्वाहा ॥ चन्द्रनादि बलिय निष्ठा ॥ ॐ स
 निष्ठा रुव ॥ ॐ यं ग यन्त ॥ धूपदीपका
 यस्तु ॥ महावीर्यामहाकायः ॐ दृष्ट
 ठिक सै निरु ॥ गृहदाय स्किर्ग ॥ गेल हिम
 वक्तैः ॥ ॐ रुन ॥ द वदान वगंध वृक्ष
 अर्ययय रुत वन रुणीय ॥ ॥ अर्य
 गन्धादि ॥ ॐ ॐ रुत दाना चर्चन ॥ ॥

गगज्ज्वाग्नेयद्यावाच्चन ॥ ॐ अग्नि यः
 द्यावायन ॥ न्यासार्ययागपूजा ॥ ॐ गत्वा
 यामि ॥ आसनं ॥ ॐ दधस्य त्वं गि ॥ अस्थ
 कर्ण ॥ ॐ त्वं न्यूरुहि ॥ ॐ विकनर्ण ॥ ॐ
 ॐ दं विष्णु ॥ ॐ स्यानाय धिवा ॥ ॐ स्वः

॥ खदि न वृत्ताय नमः ॥ ॐ चत्वारि
 मंग ॥ ॐ हृदि दानाय नमः ॥ ॐ दाना
 दवी ॥ ॐ अन्नय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ विः
 गुरु मङ्गल मङ्गल पीला ॥ ॐ ० ना नृणां
 कृष्ण ॥ सा कृष्ण ॥ ॐ सफा विः ॥
 किष्वायक ॥ वद ॥ ॐ अग्नि मूर्द्धा ॥
 सुग ॥ अन्नय नृणां न कर्षि मङ्गलः
 विष्णु कर्णक ॥ ॐ कि हस्त मङ्गल ॥ ॐ
 गस्तवान्नय नमः ॥ ॥ ॐ इय वदाय
 नमः ॥ ॥ ॐ गलपय नय
 नमः ॥ ॐ गलानां ॥ ॐ सनस्वये नमः
 ॥ ॐ यावकान् ॥ ॐ महा लक्ष्मी नमः ॥
 ॐ श्री गङ्गा ॥ ॐ कर्मदाय ध्याय नमः ॥
 ॐ अस्माक मित्य ॥ ॐ यन्त्र वाय नमः ॥ ॐ
 अश्व मुयना ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ
 वरुणाय नमः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥
 ॐ ॐ मातृदाय ॥ ॐ गमयाय नमः ॥
 ॐ गन्धर्वा ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥
 ॐ काला काला ॥ निवृत्त ॥ ॐ यक्ष
 वक्राय नमः ॥ ॐ यक्ष्णाय नमः ॥
 ॐ यक्ष्णाय नमः ॥ ॐ यक्ष्णाय नमः ॥

हर्ष ॥ ॐ नमो नमः ॥ ॐ त्वय विष्णु
 दा ॥ ॐ आग्नेय दानादिना ॥ गाः
 खावलि ॥ ॐ नमो वरु
 नाय ॥ चन्द्रनादिवलिपुत्रिष्ठा ॥ ॐ
 सुप्रतिष्ठा रुव ॥ ॐ यग्यथा ॥ धूपदी
 पजायकाय ॥ अर्थवयस्कृत्वनरु
 लीय ॥ अग्नौ भूदि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 यदा नार्चन ॥ ॥ ॥

गगनैर्हृत्पदा नार्चन ॥ ॐ नैर्हृत्प
 दानाय नमः ॥ न्यासाद्यपायपूजा ॥
 ॐ गत्वा यामि ॥ आसने ॥ ॐ धवस्यत्वा
 ॥ अस्मत्पूर्व ॥ ॐ त्वमग्नेयुलि ॥ ॐ वि
 कनर्वा ॥ ॐ ॐ देविष्णु ॥ ॐ स्थानाष्टधि
 वी ॥ ॐ चक्रवर्त्तकाय नमः ॥ ॐ चत्वाः
 निर्लिंगा ॥ ॐ कीर्तिद्वानाय नमः ॥ ॐ
 दानादवी ॥ ॐ नैर्हृत्पदाय नमः ॥ ध्या
 ना ॥ ॐ इन्द्रवान्नरकटककुक्षानैः
 ऋत्विक्कगानन ॥ यत्र मेस्तिग ॥ ॐ
 रुक्मा नीला रुक्मा रुक्मा विप ॥ ॐ
 द ॥ ॐ यकदवी ॥ ॐ ॥ नैर्हृत्पदः

नृप ॥ ॐ वरुणावधुक्कामहावत ॥ नका
 रुक्म नकावधुक्कामहावत ॥ ॐ ॥
 ॐ उयवदाय नमः ॥ ॐ गलयनय ॥
 ॐ गला नीला ॥ ॐ सनस्वये नमः ॥ ॐ
 पावकान ॥ ॐ महात्त ॥ ॐ ॐ ॐ
 न ॥ ॐ वामनधजाय नमः ॥ ॐ अस्माः
 कमिद ॥ ॐ पन्नवाय ॥ ॐ अस्मत्पूर्व
 नागा ॥ ॐ कृपाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 दि ॥ ॐ सर्वपाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ मयाय ॥ ॐ गन्धदाना ॥ ॐ ॐ
 ये ॥ ॐ काष्ठाकाष्ठा ॥ निवृत्त ॥ ॐ
 पंचवकाय ॥ ॐ यद्वरुणा विष्णु
 ॥ ॐ पञ्चसूत्राय ॥ ॐ नकाहर्ष ॥ ॐ न
 काये ॥ ॐ त्वय विष्णु दा ॥ वलि ॥ ॐ नैर्हृत्
 पदि दानादवी ॥ ॐ वलि ॥ ॐ ॐ ॐ
 हा ॥ ॐ नमो वरुणाय ॥ चन्द्रनादिवलि
 पुत्रिष्ठा ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा रुव ॥ ॐ यग्यथा ॥
 धूपदीपजायकाय ॥ अर्थवयस्कृत्वनरु
 लीय ॥ अग्नौ भूदि ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 नार्चन ॥ ॥ ॥ ॥

नमो वायुदेवाय नमः ॥ उ वायुदेवाय नमः ॥
 यनमः ॥ न्यासाय वायुदेवाय नमः ॥ उ नमः
 यामि ॥ आसनं ॥ उ देवस्य त्वा ॥ अस्य क
 ली ॥ उ त्वमन्त्रयुक्तिः ॥ उ चिकनली ॥ उ
 ॐ देवि ॥ उ सोनाय विवी ॥ उ वेक
 कृत्वा यः ॥ उ वत्ता विष्टी ॥ उ यः
 सिद्धायाय ॥ उ द्वाया देवी ॥ उ वायुः
 वः ॥ ध्यान ॥ उ पीना गोनाथ वायुम
 कं विगुरुधनात्मनः ॥ नका कालं व
 वाहय मगल ॥ धिक्की धिक्की ॥ उ नव
 वायु ॥ सुग ॥ वायुवायु नृप ॥ कृष्णः
 धरुहसामहावतः ॥ सर्वपापहन्तक
 त्वेव वायुदेवनमाहुः ॥ उ उ यवदा
 यः ॥ उ गणय गयः ॥ उ गणनात्मा ॥
 उ स नखल ॥ उ पावकान ॥ उ महा
 ल ॥ उ धीधन ॥ उ सर्वनरधजा
 यः ॥ उ अस्माकमिन्द्र ॥ उ पन्नवायुः
 ॥ उ अश्वरूपना ॥ उ कगायः ॥ उ
 कृत्वा यः कदिनसि ॥ उ सख्ययायः ॥
 उ मातृदाय ॥ उ गमयायः ॥ उ
 गन्धर्वा ॥ उ द्वायैः ॥ उ काकुत्सा
 कु ॥ निवृत्त ॥ उ यवककायः ॥

उ यवककायः ॥ उ यवककायः ॥ उ यवककायः ॥
 यः ॥ उ नकायः ॥ उ नकायः ॥ उ नकायः ॥
 यविष्टा ॥ वलि ॥ उ वायुयदि न्दान
 दवगाथा वलि ॥ कृत्वा ॥ वन्दन
 दिवलिपति ॥ उ सुपति ॥ उ
 यगर्वा ॥ धूपदीपकायकायः ॥ उ अ
 यवयवककायः ॥ ॥ अगर्वा
 दि ॥ ॥ निवायवदाय नमः ॥ ॥

नमो वायुदेवाय नमः ॥ उ वायुदेवाय नमः ॥
 यनमः ॥ न्यासाय वायुदेवाय नमः ॥ उ नमः
 यामि ॥ आसनं ॥ उ देवस्य त्वा ॥ अस्य क
 ली ॥ उ त्वमन्त्रयुक्तिः ॥ उ चिकनली ॥ उ
 ॐ देवि ॥ उ सोनाय विवी ॥ उ वेक
 कृत्वा यः ॥ उ वत्ता विष्टी ॥ उ यः
 सिद्धायाय ॥ उ द्वाया देवी ॥ उ वायुः
 वः ॥ ध्यान ॥ उ पीना गोनाथ वायुम
 कं विगुरुधनात्मनः ॥ नका कालं व
 वाहय मगल ॥ धिक्की धिक्की ॥ उ नव
 वायु ॥ सुग ॥ वायुवायु नृप ॥ कृष्णः
 धरुहसामहावतः ॥ सर्वपापहन्तक
 त्वेव वायुदेवनमाहुः ॥ उ उ यवदा
 यः ॥ उ गणय गयः ॥ उ गणनात्मा ॥
 उ स नखल ॥ उ पावकान ॥ उ महा
 ल ॥ उ धीधन ॥ उ सर्वनरधजा
 यः ॥ उ अस्माकमिन्द्र ॥ उ पन्नवायुः
 ॥ उ अश्वरूपना ॥ उ कगायः ॥ उ
 कृत्वा यः कदिनसि ॥ उ सख्ययायः ॥
 उ मातृदाय ॥ उ गमयायः ॥ उ
 गन्धर्वा ॥ उ द्वायैः ॥ उ काकुत्सा
 कु ॥ निवृत्त ॥ उ यवककायः ॥

ऊदायन ४३ मान वृषस्तु यनमारु
 न ॥ उं उयवमाय २ ॥ उं गुणयगय २ ॥
 उं गणनांता ॥ उं सनस्वसे २ ॥ उं पाव
 कान ॥ उं महाल २ ॥ उं गी २ ॥
 उं सुप्रतिष्ठिगधजाय २ ॥ उं अस्माक
 मिन्द ॥ उं पन्तवायनम ४ ॥ उं अस्वस्त
 यना ॥ ॥ उं कृणाय २ ॥ उं वृहस्पते
 दिनसि ॥ उं सवपाय २ ॥ उं ॐ मातृ
 य ॥ उं नामयाय २ ॥ उं गन्धर्वा ॥ उं
 दृष्टये २ ॥ उं काकुत्ताकुत ॥ निवृत्ता
 ॥ उं पञ्चवक्राय २ ॥ उं यवकृष्णायि
 श्रुता ॥ उं सुणाय २ ॥ उं नकारुनी ॥ उं न
 काय २ ॥ उं त्वयविष्टदा ॥ वलि ॥ उं ॐ
 गानदिद्वानेदवगाथावलि १२ स्व
 हा ॥ उं नमावसूनाय ॥ चन्दनादिवलि
 यगिष्टा ॥ उं सुप्रतिष्ठारुव ॥ उं यगय
 का ॥ धूपदीपजायस्तु ॥ अयं च यस्तु
 सुवनकृणीय ॥ अणनधादि ॥ ॥ ॐ
 गीगानन्नागार्चन ॥ ॥

गगाधानाचन ॥ उं अस्माकनाय २ ॥

यासार्धपापपूजा ॥ उं गत्वायामि ॥ आस
 न ॥ उं दवस्यता ॥ अस्तु कर्ण ॥ उं त्वम ॥ न
 ग्रहि ॥ उं विकनर्ण ॥ उं ॐ दविष्णु ॥ उं
 स्थानादधिवा ॥ उं अस्वस्त वृत्ताय २ ॥ उं व
 त्वावलि ॥ उं उध्विदनाय २ ॥ उं दाना
 देवी ॥ उं अननाय २ ॥ ध्यान ॥ उं अनर्क
 पूजनीका ॥ रुद्रादगगनीयर्ण ॥ विद्युः
 दामपतीका ॥ कूर्मावर्तय पूजय ॥ उं
 गीगियदा ॥ स्तुत ॥ उं अस्माकनाय २ ॥
 न सवर्तुनममिर्ण ॥ कूर्मासनसमा
 स्ताय नमस्तु वक्रपादय ॥ उं गणनां
 ता ॥ उं सनस्वसे २ ॥ उं पावकान ॥ उं म
 हात २ ॥ उं गी २ ॥ उं धजाय २ ॥
 उं अस्माकमिन्द ॥ उं पन्तवाय २ ॥ उं अ
 स्वस्त यना ॥ उं कृणाय २ ॥ उं वृहस्पते
 दिनसि ॥ उं सवपाय २ ॥ उं ॐ मातृ
 दाय ॥ उं नामयाय २ ॥ उं गन्धर्वा ॥ उं
 दृष्टये २ ॥ उं काकुत्ताकुत ॥ निवृत्ता
 उं यवक्राय २ ॥ उं यवकृष्णाय ॥ उं सुप्र
 य ॥ उं नकारुनी ॥ उं नकाय २ ॥ उं त्व
 यविष्टदा ॥ वलि ॥ उं अस्मादिद्वानेद

मार्य नमो कुरु धावया शुभम नमो
 ॥ आवाथावावथया ० सर्वविघ्ननिः
 वावली। ना। धामरुग्यनीयूकं यं यं क
 मसमावरुग। यासाद क्रियं न कः
 यावत्कालं कुरु सति ॥ ॥ वाक्य ॥ ॐ य
 रुसं वरुणाथय विद्यानां धंसनाय
 व। यूयं समाहवन्ते ४ सुनद्वत्तय
 गाह्या ॥ मूलमकुल ॥ ॐ नकारुनी ॥
 शुभमं कृत्वा ॥ स्वस्त्वान ॥ निवदरुग
 किवाभस्तिनासननस्वाय पूनर्वा
 विपूनयत् ॥ ॐ निविशमद विधि ॥

गग १ निवग कि कलगावर्चन ॥ न्यासा
 र्ययागपूजा ॥ ॐ आधनादि ॥ ॐ गनू
 जसनाय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ शुद्धसुठिक
 र्मकाणी गनूजसनसेस्तिनी। वरुहु
 ॐ दिनेग ४ विषय्यापिनमीत्यनी।
 गुदावकाद्वहसारायाया ४ नय ४
 कीरुग ॥ ४ ॥ कनायाविधुगीसर्वा
 पदवनाननी ॥ ॥ ॐ यमासनाय २ ॥
 ॐ कमासनाय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ वाभयमा

लयादवीदवीवहुहसामयौवना।
 सच्चलिका नसंयका वेकवकास
 ॥ १ ॥ रुना। अ। धादव्येककुरु ४ ॐ
 ४ वयुषकादुकी। उगानिधाविगी
 धायगुसूनिनाथरुविधिया ॥ शु
 ४ लि ॥ ॐ ४ ॐ ४ ॐ ल श्रीवासदवाय
 नम ४ ॥ ३ ॥ ॐ यनूधारुमायल श्रीस
 रिगाय २ ॥ वेद ॥ ॐ सहसगीर्वा ॥ ॐ
 धीप्यगल श्री ॥ ॐ अर्द्धमासा ॥ ॐ अ
 ॥ न ४ यरुगि ४ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ४ यरुगि ४
 ॐ नरुग ४ ४ स्वाहा ॥ ॐ था ॥ ॐ था ॥ ॐ
 ॐ कावसि ॥ ॐ सुपर्वया ४ ४ नय ॥ ॐ आ
 पादवा ॥ ॐ अर्धसूपया ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 कनासि ॥ ॐ अरुनाजाय ॥ ॐ समिग
 ० ॥ ॐ धीप्यग ॥ कसकन ॥ सिंधुमूढ ॥
 रुलसं ॐ था ४ रुलिनी ४ ॥ अर्न ॥ ॐ अ
 नयग ॥ धूप ॥ ॐ धूपसि ॥ दीप ॥ ॐ ग
 जासि ॥ चयनादिवलियगि ४ ॥ जाय
 साय ॥ मलायधीसकल ॥ अर्गन ४
 दि ॥ ॥ ॐ निविग कि कलगावर्चन ॥

नमोऽर्चयामि नृणां पूर्वकलनयू
 जा ॥ उं उयाय २ ॥ उं विजयाय २ ॥ उं
 द्याय २ ॥ ध्यान ॥ उं उनावतगजा नृ
 हवर्गुकिनीतिनं । गङ्गासहस्रनयनं
 वङ्गायागि विरावयम् ॥ वद ॥ उं ग
 नावमिन्दु ॥ स्तुत ॥ उं ॐ ॥ सुनपुनि
 त्वेव वङ्गाहस्रमहावल ॥ सर्वयः
 साधियादव ॥ गङ्गा नानुमी ॥ सुग
 अङ्गनादि ॥ ॥ ॐ निपूर्वद्वानाचन
 विधि ॥ ॥

आनय ॥ उं आनयाय २ ॥ ध्यान ॥
 सकाञ्चिर्वचविगागमकमालाकम
 तुलं । कालामालाकलं नकं गकिह
 र्ककगसनं ॥ वद ॥ उं अनिर्म्मा ॥
 स्तुत ॥ उं सर्वगतामयादवा नकवः
 ॥ सुमहायुगि ॥ कगसन ॥ गकिहः
 स्तुत ॥ निदवनमा ॥ सुग ॥ अङ्गनादि ॥
 ॐ स्थापनयद्वावाचनं ॥ ॥

दक्षिण ॥ उं वज्राय २ ॥ उं वज्राय २ ॥
 उं यमाय २ ॥ ध्यान ॥ उं कगनं महिषा

नृदं दलुहर्कहयानकं । कालयाः
 गधर्नकालं ध्यायदक्षिणदिक्कनि ॥
 वद ॥ उं यमेनदहं ॥ स्तुत ॥ दलुहर्क
 यमादवा धर्माधका महावल ॥ ॥
 त्वं वज्रावरुयि ध्यामि धर्मनाजन
 मा ॥ सुग ॥ अङ्गनादि ॥ ॐ निदक्षि
 णद्वानाचनं ॥ ॥

नमोऽर्चयामि ॥ उं नमोऽर्चयाय २ ॥ ध्यान ॥
 उं नकनर्गनावा नृदं नीलात्यलदल
 यरं । दयालयालिमसोर्धपिवर्कना
 कसेध्वनं ॥ वद ॥ उं यकदवी ॥ स्तुत ॥
 ॥ सर्वधमाधियत्वेव नमोऽर्चयानीलवि
 यरु ॥ स्वप्नहस्रमहावीना नानुसाय
 नमी ॥ सुग ॥ अङ्गनादि ॥ ॐ निनेर्
 णद्वानाचनं ॥ ॥

नमोऽर्चयामि ॥ उं ध्याय २ ॥ उं विधाय २ ॥
 उं वज्राय २ ॥ ध्यान ॥ उं नागपागधर्न
 हर्षवलोर्धयुगि विग्रहं ॥ गङ्गादधव
 लं ध्यायद्वर्गमकनासनं ॥ वद ॥ उं
 ॐ मभवर्ग ॥ स्तुत ॥ नागपागधः

कानिस्तु ऊलनाजामहावल३।निः
मग्नल्येवविख्यानागनायनम३।
अग्नयिदि॥ ॥३॥निबिष्टस्यद्वानाचुनी॥

गंगा वायव्य ॥ ॐ वायव्य २ ॥ ध्यान ॥ ॐ
 ज्ञायां गुरु विष्णुय, विला लक्ष्मण वि
 ली। पाद लक्ष्मण वरुणा ना, रु वि लक्ष्मण
 मा वि ली ॥ वेद ॥ ॐ ग व वायु ॥ स्मृ ॥
 सर्व पाप लक्ष्मण व सर्व लक्ष्मण वायु द
 वगा। ध जह लक्ष्मण महा पाक्ष वायु द व
 नमो लक्ष्मण ॥ ज्ञान लक्ष्मण ॥ ॐ नि वा
 यव्य दाना चर्चनी ॥ ॥

नमो भगवते ॥ ॐ विश्वेश्वरनाथ ॥ ॐ
 कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥ ध्याः
 न ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥

ॐ नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ध्यानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ शिखरं चतुर्भुजं
 ध्यात्वा विष्णुं । गन्धर्वान् वदन्तः प्रचक्षते
 मोहिनिं शिलावनम् ॥ वन्द्यं तं गमीश्वरम् ॥
 सुप्रसन्नं सर्वविधाधिपम् ॥ नमस्तस्मै श्रीगणेशाय ॥
 नामगणेशाय ललाटे नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नाथनमस्कृतम् ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्तुतिम् ॥

नमो भगवते ॥ ॐ अथ सज्जन काय ॥ १ ॥
न ॥ ॐ अथ नमो भगवते ॥ १ ॥
गी गियदा ॥ १ ॥ यत्र गमयिष्ये देव
अथ नमो भगवते ॥ १ ॥ या गा ल वस गे नि
समन काय नमो भगवते ॥ १ ॥ अथ नमो
दि ॥ ॥ ॐ अथ (१) दाना चर्चन ॥ ॥

ॐ ह्रीं ॥ ॐ हुं ध्यायिषुः कृत्वा ॥ १२ ॥ ध्यानं ॥
 ॐ पीनपीनमिति ॥ वंद्यं ॥ ॐ बुद्धयद्
 नं ॥ स्तुति ॥ यद्यथा निश्चलम् ॥ ॥
 अथ गन्धर्व ॥ ॥ सूर्यदेवनाथेन ॥

वायव्यस्य पूर्व गलयनिष्ठं यत् ॥ आ
 वाहनादि ॥ उं गलयत् २ ॥ ध्वने ॥ ५ :
 कवक्ता महाकायः ॥ ध्वनवत् ॥ महाः
 युनिः ॥ गजवक्ता महावीरः ॥ ध्वनद्व
 गलाधियं ॥ वद ॥ उं गला नीला ॥ सुग
 गजवक्ता महावीरः ॥ मूलभादकयानि
 नः ॥ सर्वविघ्ननिवारणं ॥ गृह
 मास्तु ॥ अर्घ्यं ॥ ध्वनिगलाक
 ललाचनं ॥ ॥

[illegible]

नैर्मल्यपूर्वथागिना ॥ ३ ॥ अथागिनास्या
२ ॥ ध्यान ॥ एतन्मन्त्रं महायागिना
सर्वलोकसंयुता ॥ नैर्मल्यपूर्वग

स्नानं यागिनीमूर्तिं विज्ञावयन् ॥ व
द ॥ उ व स च म व स व च म च च म च
कि च म च च म च म च म च ॥ ॐ स्वा
भगति च म य ह न क ल्य का मे ॥ ॐ
ले ला क व्या पि नी द वी क र्ति का या ल
वि नी ॥ वि घ्न म ह क नी द वी था गि नी म
ह न मा ह सु न ॥ ॐ ग ग म्हा दि ॥ ॐ गि या
गि नी क ल ग्ना च नी ॥ ॥ ॥

वायव्यस्य दक्षिणं कुरु ॥ ४ ॥ ॐ कुरु या
लाय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ वदन्ति विष्णुं कर्ण
वर्धनं विष्णुं विष्णुं लावर्णं । दधुर्धुमन्मय
द्विगुणितं लवकालिनं ॥ वद ॥ ॐ अ
संख्याता ॥ कुरु ॥ न नास न समास्ता
य वायु दक्षिणं संहि ॥ सर्वगुरुस
मास्ताय कुरुयाल न माह कुरु ॥ अः
गर्गधादि ॥ ॐ नि कुरु कलनां चर्चनं ॥ ॥

यत्थिमस्थारुणं वासुकलनार्चने ॥ ॐ
वासुवं नमः ॥ ध्यान ॥ पीतवर्णं बहुव
दं बहुवर्णं कशाननं ॥ हृदयानेवः

मात्रस्तु गता दद्याद्विभुजा कल्लभावः
 ना। रुमा रुव वरुषा नी। एव गारु वरु
 धिना। एवामगी। एव वधाय सर्वपापय
 नागनी॥ वेद॥ उं शुभं की॥ सु। उं अः
 मृगी गम रुमाय विष्मति धर्मनायव॥
 यथायव स्वयं याय नमा सुगय लावन॥
 अर्गग धादि॥ ॥ ॐ निमृष्टं यकल्लगपुजा॥

गगज्रादित्य कल्लगवर्न॥ उं अदित्या
 य२॥ ध्यान॥ उं वक्रपद्मासनासीनं उ
 डिमी कसुमयुतं। एका स्य सुमुखं देवं
 सना लाङ्का कवचयं। एवै चिकय गरा
 नै सर्वपापय नागनी॥ वेद॥ उं अक
 र्क॥ सु। उं सरुमा उं मरु गजा मलि
 कलिकुल मलुनी। सुय्या याधिः
 समीपांग॥ १ कवचं वल विग्रहं। सना
 लयाय लाङ्गी व विग्रह स्तब्ध कनकुमाः
 न॥ अर्गग धादि॥ ॥ ॐ निमृष्टं यकल्लगपुजा॥

गगनागवर्न॥ उं वक्रपद्माय२॥ ध्यान॥
 नागपाणधर्न रुष्टं नलो घय निविग्र

ह॥ अनन्ता वासुका वैव ग रु क ४ कः
 कैटिक सुधा। यथा महायय (वेव
 नीखया ल कल्लि सुधा॥ वेद॥ उं ॐ म
 वरुण॥ सु। नाग पाण ल कानि र्थं॥
 ॐ निनाग वाज यूजनं॥ ॥

गगायक यकली यूजनं॥ उं यकाय२॥
 उं पीत वल्गुमि हा कोया बीज यूज क धाव
 क॥ रुमालंका व सोराडा धन धान्या द
 यं पुरु॥ वेद॥ उं अने अरुका॥ ॥ उं
 यक (वेव नम॥ ध्यान॥ उं ध्या म वल्गुमि
 हा गं जा स वलंका व (म रिगा। वल्लयू
 लुङ्ग कल्लग य कली व नमा मयडं॥ वेद॥
 उं य (लाय क॥ ॥ सु। यक व न ४ य
 सना सो य कली सरु सै यूग॥ सर्व वि
 रुव कल्ल व नम रु य क य कली॥ ॥
 ॐ नि य क य कली यूजा॥ ॥

गग ४ पीत श्री यूजा॥ उं विथ२॥ ध्यान॥
 उं ध्या न स विस्मि गानि र्थं नीला यल दल
 पुरा। सिद्ध नय मरु ला व का नि सोरु

नमोस्तुता॥ वंद॥ उं श्रीगणेशाय नमः॥ उं ल
क्ष्मी नमः॥ ध्यान॥ उं यद्वासनस्तुताद
वीमुहसूटिकर्त्तृनिता॥ अरुदय्य
गुरुकावधनधानवनप्रदा॥ वंद॥
उं पावकान॥ स्थाप॥ उं श्रीसूक्तदेव
देवी च सर्वसंप्रदायिनी। सर्वका
मप्रदा देवी नमस्तुत्या नमानमः॥
अष्टगंधादि॥ रंगिलकी पूजा॥ ॥

उवादि कल नयूजा ॥ उं सर्वस्य ४ कलः
(न स्यात् २ ॥ उं आ डि इ कल ॥

गंगा। गमय लिंगार्चनं ॥ ॐ सदा निवाय
२ ॥ ध्यान ॥ ॐ का वयः। गमय लिंगं
निर्वसत्तु नृपिणं। वक्रागु व्यापिनी
दवं। आ। नयं तु वनं नृपिणं ॥ वद ॥ ॐ
सदा जागा ॥ ॐ ॥ स्तुत ॥ ॐ हिमकन्दनि
रुदवं। उठाहूँ नृधनि। सर्वया
परुनं नृव वदं नृपमं निर्व ॥ अण
गन्धादि ॥ ॐ गि। गमय लिंगार्चनं ॥ ॥

ग० ४४ ॥ लि० ला० च० न० ॥ न्यासाद्यैक्यं य० पू० ज०
 ॥ आसनादि चतुर्धा वि० पू० ज० ॥ ॐ आ० धी
 नादि अ० षट्पथिका स० न० ॥ ॐ ग० न० ग० स०
 नाय० २ ॥ आवाहनादि ॥ ॐ न० अ० हि० रुः
 ग० व० न० वि० श्रु० ॥ लोकान् ग्रहकायकाय
 रूपागं ग० हा० लो० द० वा० सू० द० व० न० मा० स्तु
 ग० ॥ ध्यान ॥ ॐ ग० ख० क० न० द० स० का० गं० क०
 र्वा० क० सू० लो० रु० न० ॥ ग० ख० व० क० न० द० य० द्वां
 व० न० मा० ला० वि० रु० धि० गं० ॥ ग० अ० सि० न० स्ति० गं०
 नि० र्ण० ल० म्ना० ना० र्थ० उ० ग० त्प० रुं० ॥ ध्या० य० दः
 व० लि० ता० क० र्ण० स० र्व० का० म० रु० ल० य० द० ॥ मूः
 ल० म० क० न० ग० श्रु० लि० ॥ म० ध्या० ॥ ॐ वि० पू० व० २ ॥
 ॐ ल० श्रु० २ ॥ ॐ ना० वा० य० न० य० २ ॥ ॐ वि० पू०
 व० २ ॥ ॐ वा० मा० य० २ ॥ ॐ दा० मा० द० वा० य० २ ॥
 ॐ वा० सू० द० वा० य० २ ॥ ॐ स० क० र्व० न० य० २ ॥
 ॐ य० य० न्ना० य० २ ॥ ॐ अ० नि० र० द्वा० य० २ ॥ ॐ
 क० न० वा० य० २ ॥ द्वा० द० न० ना० म० ॥ द० न० व० ना
 व० ॥ ॐ द्वा० दि० ॥ ष० उ० न्न० ॥ ग० य० गी० ॥ व० द०
 ॐ य० श्रु० गं० ॥ ॐ ॐ द० चि० पू० ॥ ॐ ॐ ना० व
 गी० ॥ ॐ द० व० श्रु० गी० ॥ ॐ वि० पू० लू० कं० ॥ ॐ दि
 वा० वा० वि० पू० ॥ ॐ प० ग० दि० पू० ॥ ॐ वि० पू० :

व ज्ञा तम सि ॥ उं ग्रा वि य दा ॥ उं विष्णु
 कृष्ण लि ॥ उं गृ द्वि पा सा ॥ उं गृ द्विष्णु
 ॥ उं ग्रा न्य ग ॥ उं स्र प ल्भु सि ॥ धृ य द
 य ज्ञा य स्र ग ॥ उं विष्णु ल्य नु नि रुं व
 य ४ क म ल ज्ञा वे कृ ल्भु या न क दा पा
 क स्र रु व स न विल स रु षा व नाल
 रु गा ॥ वि श्रा र्थ क ज द प्य र्ण म नि म र्य
 क र्ण स नार्ज ग दा र्ण र्व व क म रु नि
 वि श्र ग मि दं विष्णु ४ स दा व रु रु ॥ अ
 रु ग म्हा दि ॥ ॥ ॐ नि र्धं ति ला च न ॥ ॥

धूनः यकि क्रमल गिव ग कि कल गम च
 न ॥ ॐ धू नू धा रु मा य २ ॥ ॐ स रु स गी वा
 ॐ ल ॐ २ ॥ ॐ या व का न ॥ स गु ल ॥ ॐ वा
 क ल स ॥ व लि ॥ ॐ अ र् स र् वा गा ॥ ग ल ॥
 ॐ न मा ग ल र् वा ॥ द र् ना ॥ ॐ ज ग व द ॥
 ल ग य स ॥ ॐ अ र् य (गे) ॥ इ र् वा पि र् वा ॥ ॐ
 स क्ति न ॐ द्या ग ॥ धू य ॥ ॐ धू न सि ॥ ॐ ग
 ज सि ॥ रु ल ॥ ॐ या ४ रु लि नी ॥ अ न ॥
 ॐ अ न य ग ॥ य नि द्या ॥ ॐ म ना दू नि ॥
 ज य ॥ ॐ न लो य धा ॥ ॐ नि क
 ल ग म च न ॥

ॐ यत्थं कथयन्त न
 नुमन्तं मत्तममुप। वरुणीयं उगना
 धसन्निधि नव वषट् ॥ ॥ कर्माय १०
 न ॥ ॐ ॐ न्यायाला कपाला गुरुगुरु
 येगा दानवदी समस्त आत्मशुद्धये
 नुक्तं त्वहिमं गुरुतदा देवदेवी प्रस
 न्ने ॥ नाना विष्णुपण्डितैर्मम इति गय
 रुमन्तु मूढा विलापा वेगसर्वं कर्मा
 र्थं तु गुरुगुरु वगायन्तु संपूर्णं मन्त्रं ॥
 वरुणिकं पूज्य कथयन् ॥ ॐ न्याया
 यानि रुगानि स्मृता वना नि वना नि च ॥
 वक्रा विष्णु निवा ४ सां ग न कर्तुं कर्तुं
 मसदा ॥ अग्नौ नमः ॥ ॥

वायव्यं गतं यत्तियूजा ॥ ॐ गतं नत्वा ॥
 आचार्यः कृतुसमीपं गत्वा ॥ गतः स
 र्वत्राकृष्टान्त्रिवादयत् ॥ ॥ वाक् ॥
 नृत्वा दत्तं यत्तु दत्तं सामेव दत्तं यत्तु
 दत्तं ॥ गुप्तसाधकः कृतुः न कृतुः मां गुप्तः
 न ॥ सिंहासनं समाचारं कृतं मिश्रं
 कृतं ॥ ॥ कृतं कृतं कृतं ॥ ॥

ह्रीं नमः नमः स्यामि त्वां ह्रीं द ह्रीं वसु
त्वनं ॥ सर्वेषां लोकेषु निवचनं ॥ उ
आनाहय ॥ पुनः नमः स्कारं कृत्वा ॥

गङ्गा ॥ वसुधा ॥ स ॥ अर्घ्यपात्रयुक्ता
॥ उं आय ॥ शीत ॥ कृष्ण ॥ गतिदधिमः
विश्वगुलं ॥ गिलासिद्धार्थकंदूचा
अर्घ्यपात्रयुक्ता ॥ रुद्रगुह्य ॥
पाद ॥ याम ॥ ॥ कृष्ण ॥ यन ॥ उं अः
निमनिसदाहवगु ॥ विककीहव
वाहनयुक्त ॥ ॥ भस्वलापि ॥
स्वायनी ॥ उं नमः ॥ अर्घ्यपात्रयुक्त
युक्त ॥ नमः ॥ अर्घ्यपात्रयुक्त
गङ्गा ॥ माद ह्रीं नमः ॥ ॥ कृष्ण
लहरी ॥ उं अर्घ्यपात्रयुक्त
गङ्गा ॥ नमः ॥ अर्घ्यपात्रयुक्त ॥

कृष्ण ॥ यन ॥ काल ॥ सकलायान
युक्त ॥ उं रुद्राकादि ॥ उं गङ्गा
य ॥ रुद्राकादि ॥ विष्णु ॥ मयः
नि ॥ वलि ॥ कल्प ॥ अर्घ्य ॥ उं सक

पृथय ॥ ॥ उं यामि ॥ नि ॥ वि ॥ ॥ ल
मयलि ॥ उं नमः ॥ रुद्राकादि ॥ सा
पानावाहनं ॥ ॥ उं वत्ताविष्णु ॥ य
व्यदानं ॥ ॥ यद्गुप्त ॥ रावनिनीकनी ॥
उं या ॥ उं वधि ॥ ॥

उं महा ॥ उं यु ॥ नि ॥ ह्रीं नमः ॥ रुद्राकादि ॥
गङ्गा ॥ यन ॥ वलि ॥ युक्त ॥ उं गङ्गा ॥ ना ॥ त्वा ॥ उं
नमः ॥ वत्ता ॥ य ॥ रुद्राकादि ॥ उं जाग
वदस ॥ दन्त ॥ वलि ॥ धूपदीप ॥ य
काय ॥ उं गङ्गा ॥ यन ॥ रुद्राकादि ॥ य ॥ नि ॥ व
लि ॥ वि ॥ स ॥ रुद्राकादि ॥

अर्घ्यपात्रयुक्त ॥ दग ॥ स ॥ स्कारं ॥ रुद्राकादि ॥
नमः ॥ रुद्राकादि ॥ उं रुद्राकादि ॥ वि ॥ कथः
दवस ॥ वि ॥ य ॥ वि ॥ त्वा ॥ म ॥ य ॥ म ॥ सा ॥ जा ॥ य ॥ का
॥ य ॥ वि ॥ रुद्राकादि ॥ य ॥ द ॥ या ॥ य ॥ रुद्राकादि ॥ य ॥ वि ॥ य
उ ॥ व ॥ न ॥ मा ॥ वि ॥ व ॥ स ॥ रुद्राकादि ॥ ॥ ॥ अर्घ्यपात्रयुक्त
नी ॥ उं अर्घ्यपात्रयुक्त ॥ ॥ ॥ अर्घ्यपात्रयुक्त
नी ॥ ॥ ॥ क ॥ व ॥ र ॥ ना ॥ य ॥ रुद्राकादि ॥ उं रुद्राकादि ॥
यननी ॥ उं य ॥ रुद्राकादि ॥ द ॥ व ॥ रुद्राकादि ॥ उं रुद्राकादि ॥

रिनि

स

स्वामकुलमृदिकायाश्च ॥ ७ ॥ इदं य
नयुवर्ग ॥ ११ ॥ निशामकुलसमीकनः
र्ग ॥ ८ ॥ कवचनासूकर्ग ॥ ९ ॥ अः
कुलकूटर्ग ॥ १० ॥ उमानकाक ॥ ७ य
लयर्ग ॥ ११ ॥ उं त्वामृदु ॥ सीमार्जर्ग ॥ १२
उं गत्वायामि ॥ अर्घ्याशोकनसिद्ध
यर्ग ॥ १३ ॥ कृगयुग्मनिधाय ॥ पूर्वद
किंययिमाहवयुग्मयुग्म ॥ उं दव
स्यत्वा ॥ विसृगीकृणुवद्वर्ग ॥ यंवसृग
वकवसृग ॥ उं वकाहर्ग ॥ १४ ॥ योग
वृक्षनयर्गलिखत् ॥ उं हिनवधगर्ग ॥
१५ ॥ उं अर्घ्यवर्ग ॥ वखाकवर्ग ॥
१६ ॥ अर्घ्यवर्गकवर्ग ॥ १७ ॥ इदं य
नचतुर्थ ॥ १८ ॥ ॐ स्वस्तिदमसंस्का
र्ग ॥ ॥

नक

उंसदसस्यगति ॥ धन्यकृयर्ग ॥ उं वी
हयध्वम ॥ वीहियकृयर्ग ॥ उं त्वयविष
या ॥ लाजाकृयर्ग ॥ उं हिनवधगर्ग ॥ यंव
वर्गनिधाय ॥ उं यद्माननति ॥ सुवर्ग
जगयर्गनिधाय ॥ उं दवस्यस्यनि ॥ वि

धनासर्ग ॥ उं गत्वायामि ॥ दृगनिधाय ॥
उं गीध्वम ॥ यव्यनिधाय ॥ उं यकनमन
सति ॥ वागाध्वनीयुजर्ग ॥ उं हिनवधवः
गृहविणी ॥ लक्ष्मीकृयर्ग ॥ उं नावाय
गीअमृगगजनीयनाये ॥ अर्घुमगी
ध्वत्वा ॥ ॥ यजमानरुक्मन ॐ धनच
तुष्टय आचार्यरुक्मसमव्ययर्ग ॥ अ
र्घ्यमृनायाकृगयगाजयर्ग ॥ उं त्वामृ
रुति ॥ काष्ठगृहर्ग ॥ उं ॐ धीनात्वा
गर्ग ॥ काष्ठनिधाय ॥ रुक्मिकादिस
कयव्यर्ग ॥ उं ध्वयान्माकृगी ॥ चन्दन
सिन्दूरयक्षयवीगयव्यसाहिर्यन
युजा ॥ उं रुक्मलाकाय ॥ ॐ स्वादि ॥ उं
अगवसृगि ॥ काष्ठकृणुयुजर्ग ॥ ॥

गगाग्निंसाधयर्ग ॥ सूर्यकामधवाः
काष्ठवाकृगस्यगृहपिवा ॥ अग्निपद्मा
लयद्वाकृगामयागृहमानयर्ग ॥ यद्वा
अग्नियगृहावावदृक्वालासेमाकृ
र्ग ॥ गगाध्वनाग्निंसाधयर्ग ॥
उं अग्निमृद्वा ॥ ॥ कृकिहायर्गदिव

लि॥ कूटशक्तिः अकृताया लयं यावयच
 वल्लयलताहायलदधनं॥ गमयाग
 सगयाव॥ यजमाननधृत्वा॥ मधुर्यगः
 म॥ नैयद्याना॥ एतसास्यं इकायाडा
 अनिकुण्डयस्मधुर्यगामयग॥ आवा
 यरुसदाययग॥ अयकयादानिक
 त्वा॥ आत्मनादकि॥ एस्काया॥ उं वक्राह
 नं॥ नाजिकासर्वधननिर्मकन॥ उं अ
 धवावदधि॥ वलियूजनं॥ यवगिलाक
 गनकयादाकगिर्य॥ उं कयादानः
 थस्वाहा॥ ३॥ एगव॥ उं कयादमनिः
 पहि॥ एमीति॥ कयादानिसंयविरुय
 वहि॥ ४॥ क्रियग॥ उयस्यगनं॥ उं ॐ हवा
 यमिगयाजागति॥ अस्यकृत्॥ उं नां ह
 दयाथमि॥ षठं॥ गनयूजा॥ उं न॥ अस्मा
 यरुद्॥ ॐ गिसंयय॥ उं न॥ कववायद्
 ॥ ॐ गिकवचनगुणं॥ उं वेष्मननाः
 यविद्महू॥ अनकाचिगायधीमहि॥ गन्ना
 वक्रि॥ ४॥ यथादयाग॥ ॐ गिगायगीनय
 ग॥ उं नू॥ वक्रि॥ वेगनायनम॥ ॐ गिव
 क्रि॥ वेगनयस्य॥ ॥ धनू॥ मू॥ डा॥ रु॥ गऊ

० ववे नक्षत्राणि वक्राकृतानलपय॥
 स्वात्मानं विष्णुमूर्तिं स्वाध्यायाकृती
 लक्ष्मीं विचिन्तयन्॥ वक्रि॥ वीजं प्रकल्प
 यन्॥ गगारनिगृहीत्वा॥ उं अन्वनिः
 वृषासा॥ अनिकुण्डं विष्णुदक्षिणीक
 र्ण॥ यजमानस्यामृकमूर्तिं विष्णुस्वा
 यननिमित्तं अनिष्ठा यनसमूर्तमः
 मु॥ उं मयिगृह्णाम्य॥ स्वाहा॥ नैरुम॥
 उं स्वस्तिवाचनं य॥ १०॥ ॐ स्वनिष्ठा
 यनं॥

वाताग्निवक्राधर्मिभ्यश्च यनयच्छा
 य॥ उं मर्माणि गति॥ उं दृष्टादिवि॥ अ
 नियूजनं॥ ॥ गगारकवाचनं॥ पूर्व
 दिवगुहिरु॥ उं अ॥ एवदाय॥ दमास
 नं नम॥ उं यरुवदाय॥ दमास नं २॥
 उं सामवदाय॥ दमास नं २॥ उं अथर्व
 वदाय॥ दमास नं २॥ उं अग्निमीठ॥
 पूर्वअरुवाचनं॥ समिधयगीनिधाय
 यथैकं॥ उं ॐ यत्वाकृत्वा॥ दक्षिणअ
 रुवाचनं॥ उं अ॥ न॥ आयाहि॥ पश्चिम
 अरुवाचनं॥ उं गन्नादवीति॥ उरुन

अरुवादनं ॥ ॐ ह्रस्वदाय अग्निल
 गायति ॥ ॐ यरुवदाय रावदाजल
 गायति ॥ ॐ सामवदाय कावयलगा
 यति ॥ ॐ अथर्वदाय वदानस्यल
 गायति ॥ ॐ ॐ दाय वरुदाय सना
 धियगय ॥ ॐ द्यादि ॥ १० ॥ ॐ स्वर्गाय
 २ ॥ ॐ मर्याय २ ॥ ॐ यागलाय २ ॥ दस
 मिधहाम ॥ एकमाकावै ॥ एकं दूषी
 रुद्रयाग ॥ ॐ उवाधवति ॥ अनिसीमू
 र्वीकनर्ग ॥ स्वापदकि ॥ ॐ रुद्रवक्र
 यलीगासर्ग ॥ ॐ वक्र ॥ ॐ दमासर्ग २
 ॐ यलीगाय ॐ दमासर्ग २ ॥ ॐ हिनव
 गृति ॥ वक्रासर्ग ॥ ॐ ॐ दैविष् ४
 यलीगासर्ग ॥ आत्मासर्ग ॥ ॐ गिच
 लासर्ग ॥ ॥ गग ४ यलीगयगायनं ॥
 अस्य रुर्ग ॥ ॐ दवस्येति ॥ यगाय
 नं ॥ ॐ यत्य ० वरुति ॥ सीमार्जनी
 ॐ अनसिगासीति ॥ आकागवाविना
 यूनर्ग ॥ ॐ आयादि ॥ वक्रायली
 गचदनय द्यायवीगनयूजनं ॥ ॐ व

क्र ॥ १२ ॥ ॐ यजायगय २ ॥ ॐ ह्रस्व
 रु २ ॥ ॐ वक्रयज्ञानं ॥ ॥ यलीगयूज
 नं ॥ ॐ यलीगाय २ ॥ ॐ ह्या २ ॥ ॐ वरु
 य २ ॥ ॐ अययगय २ ॥ ॐ गीलियदा ॥
 ॥ ॥ ॐ आ वक्रनवाक्र ॥ ॥ कृदकि
 ॥ वक्रास्त्रायनं ॥ गालयमाका ४
 दयसाहित्यन ॥ ॐ विष्ठावनाटमसि ॥
 उरुनयलीगस्त्रायनं ॥ ॥ वक्रायली
 गयूववसूजनं ॥ ॐ वक्र ॥ ॐ व
 क्रयज्ञानं ॥ ॐ यलीगाय २ ॥ अह्या २
 ॐ वरुगाय २ ॥ ॐ अययगय २ ॥ ॐ ॐ
 दैविष् ४ ॥ ॐ नमोऽस्तुनीलगीवायति
 ॥ अनियूजनं ॥ ॐ कयानविरु ॥ कग
 रुगदिचिदिकयविष्टनर्ग ॥ यथावि
 धिमकुलकलगस्तुलितादियूजनं ॥ ॥
 गगार्थयदासाधनं ॥ दूषी ॥ दकि ॥
 यूरुगाजनं कमलुल यविगु ४ दना
 दिद्वयविगविधाकगीयाग अयस्क
 लांसीमार्जनं कगउययमनकगसः
 मिधग्रवज्रा अतिलगुल यवरुय

हृदयवाय२॥ वय॥ उ० पुत्राय नमः
 देगा॥ यविर्गृहीत्वा॥ उ० ॐ वत्सः
 त्वा॥ अ० स्का० ली वत्स स्का० ली अ० निरु
 ० अ० धिगयने॥ ॥ उ० अ० यगा अ० स० वा
 ॥ क० ग० ना० का० निने॥ व० रु० ग० थ० मे० ग० व० रु
 न० र्ण॥ उ० ग० धा० द० स्मि० न० मृ० ति० लि० ४॥ ॥
 उ० द० व० स० त्वा॥ अ० स० रु० र्ण॥ गृ० व० द० वि
 यगा यने॥ उ० ग० गा० न० वि० द्यु० ति॥ स० मा० रु० ने
 ॥ उ० अ० न० सि० गा० ति॥ ॥ उ० ॐ वत्स॥ गृ०
 वा० का० व० स० उ० ने॥ द० वि० ना० व० न० मा० ला० उ०
 ने॥ उ० स० वि० रु० त्वा॥ क० ग० य० ॥ न० रु० ला
 य० स० वे० ना० नि० म० स० रु० र्ण॥ ॥ उ० स० वि० रु० र्ण
 ति॥ अ० स० स० स० रु० र्ण॥ ॥ उ० ग० का० सि॥ गृ०
 गा० व० रु० र्ण॥ ॥ य० वि० गा० न० व० हि० ग० अ० का
 द० न० ग० म० रु० न० ग० पा० रु० र्ण० स० स्का० न० वृ० र्ण
 व० ॥ उ० य० वि० रु० त्वा॥ उ० द० क० य० न० र्ण॥ उ०
 द० वी० ना० या॥ ग० या० द्वा० न० र्ण॥ उ० य० या० ॐ
 द्या॥ नृ० दि० ग० ग० य० ॥ उ० अ० न० थ० त्वा० रु
 र्ण० या० का० मी० ति॥ या० रु० र्ण० उ० द० क० ना० ति
 या० रु० र्ण॥ उ० रु० धा० स्या० ख० न० र्ण॥ स० वृ
 या० रु० र्ण॥ ॥ उ० ए० धा० रु० द० व० ति॥ अ० नि

क० रु० ति० व० द० ना० क० त्वा॥ उ० अ० दि० ले० र्ण० न
 नम० सि॥ उ० रु० य० ग० थ० स्वा० हा॥ उ० उ० व० न
 य० ग० थ० स्वा० हा॥ उ० रु० गा० ना० य० ग० थ० स्वा० हा॥
 ॥ ग० धा० द० क० य० गी० ति० नि० धा० य॥ स० य० वि० र्ण
 व० रु० न० ख० न० रु० ॥ ॥ या० रु० र्ण० द० कि० ग० न
 अ० रु० उ० रु० न० ग० १० गृ० क० रु० वा० र्ण० ॥ मृ० ला
 दि० अ० म० र्ण॥ उ० व० रु० ॥ १२॥ उ० वि० रु० व० २॥
 उ० नृ० द्या० य० २॥ ॥ अ० रु० रु० रु० ॥ उ० व० रु०
 ॥ १२॥ उ० वि० रु० व० २॥ उ० ल० रु० २॥ ॥ उ० धृ
 न० सि॥ उ० य० य० म० न० रु० ग० मा० द्या० ॥ ॥

ग० गा० रु० न० द्वा० ग० क्रि० या० मा० न० रु० न॥ ॥ उ० अ०
 नि० क० त्वा० ना० य० स्वा० हा॥ उ० रु० ग० स० या० नि० वृ
 सि॥ ॥ उ० ग० रु० धि० ना० य० स्वा० हा॥ उ० ग० रु०
 अ० स्या० धि० ना० ॥ ॥ उ० य० गृ० व० ना० य० स्वा० हा॥
 उ० स्व० क्रि० य० ना० म० न० व० न० म॥ ॥ उ० सी० म०
 ना० न० य० ना० य० स्वा० हा॥ उ० मा० दि० रु० मा॥ ॥ उ०
 जा० ग० क० र्म० ॥ स्वा० हा॥ उ० का० य० स्वा० हा॥ ॥
 उ० स० य० स० ग० क० ना० य० स्वा० हा॥ उ० ल० म० ॥ न
 गृ० हि० ४॥ ॥ उ० नि० रु० म० ना० य० स्वा० हा॥ उ० य०
 रु० य० रु० वा॥ ॥ उ० ना० म० क० न० ना० य० स्वा० हा॥

ॐ प्राणायामः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥
 स्वाहा ॥ ॐ आरुद्रिनी ॥ ॐ अन्नप्रणना
 य स्वाहा ॥ ॐ अन्नयग ॥ ॐ वृषाकन
 य स्वाहा ॥ ॐ मूर्धनिदिवा ॥ ॐ कर्पूर
 दाय स्वाहा ॥ ॐ रुद्रक (लूहि ॥ ॐ वृग
 वधनाय स्वाहा ॥ ॐ वृगकलूग ॥ ॐ गाय
 त्रीपदानाय स्वाहा ॥ ॐ वृगनदीका ॥ ॐ
 मखलाभावनाय स्वाहा ॥ ॐ उद्रुमी ॥
 ॐ समावरुनाय स्वाहा ॥ ॐ आरुद्र ॥ ॐ
 विवाहाय स्वाहा ॥ ॐ गयत्रीहि ॥ ॐ
 चरुधे स्वाहा ॥ ॐ शुभक ॥ ॐ मागावि,
 रुद्रिसर्गनाय स्वाहा ॥ ॐ मागवधूर्य ॥ ॐ
 अमलयागाय स्वाहा ॥ ॐ एवोरुदेव ॥ ॐ
 ॐ विश्वयाफाय स्वाहा ॥ ॐ विश्वगधरु
 ग ॥ ॐ पुनिष्टाय स्वाहा ॥ ॐ मनाहूनि ॥
 ध्यान ॥ ॐ ममाह ॥ ॐ यदीकावि ॥ ध्यान
 पूर्यनमः स्वाहा ॥ ॐ स्यानिदगक्रिया ॥

ॐ समिधानिद्रवस्यग ॥ अष्टादशः
 मिधमादाय ॥ ॐ गदेवानिरु ॥ मातृग
 रुद्रयाग ॥ एकभाका वग एकयणीग

निधाय ॥ ॐ वायव्यवर्गनिधाय ॥
 वामरुद्रनृपिर्षीयक (गनवक्राणी
 स्य ॥ ॐ मनुयजागय स्वाहा ॥ ॐ द
 मनवपेजाय गय स्वाहा ॥ ॐ गुरुयन्त्र
 व ॥ ॐ वाअनडय स्यर्गनी ॥ दुरुकनि
 र्गुलियक्रिय ॥ ॐ गसहिगेनसर्व
 गय (येवकरुषी ॥ ॐ गम्मास्यवधूर्य ॥
 पिसर्षीयक (गवक्रिषिवावमृदीय ॥
 ॐ अन्नवाजिहिजासनिधयनी वा
 जजिग ॥ ॐ मयि ॥ ॐ ययमनमृलेना
 त्मयजन ॥ ॐ ॐ दस्यवकासि ॥ वामः
 रुद्रवस्यग ॥ ॐ गस्मिन्नयुजयग ॥ ॐ ॐ
 दाय ॥ ॐ वक्ररुद्राय ॥ ॐ सुनाधिय
 गय ॥ ॐ गायनमिद्र ॥ ॐ गग ॥ ॐ यजायनि
 दवगामानसर्विह ॥ वक्रापणीगवद
 लाकपालाच्चनी ॥ यून ॥ ॐ मयूदवाच्चः
 नी ॥ ॐ कृष्णाय पीगद (लूनमलुलीकायय
 ग ॥ ॐ गि ॥ ॐ यक्षाय ॥ ॐ वक्र ॥ ॐ यक्षाय ॥
 ॐ दवागागय ॥ ॐ दिग ॥ ॐ विदिग
 ॥ ॐ स्यनय ॥ ॐ मयय ॥ ॐ यागल
 य ॥ ॐ गीय ॥ ॐ धाय ॥ ॐ विधाय

[illegible]

कषायै ॥ ॐ स्वरायै स्वाहा ॥ ॐ द
 परायै ॥ ॐ अग्निकायै स्वाहा ॥ ॐ द
 मग्निकायै ॥ मध्य ॥ ॐ वरुणायै
 स्वाहा ॥ ॐ द वरुणायै ॥ ॥ षड् जि
 दा कयनं ॥ ॐ सयग अग्ने नि ॥ एक
 जि दा कयनं ॥ ॥

नमः ४ यं वगव्यहामः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ
 ॐ दीविष्णुः ॥ ॐ मानसकः ॥ ॐ नमः ॥
 वहिर्गः ॥ ॐ विष्णुद्वानां ॥ ॐ अन्नयस्त
 विष्णुगव्याहामः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ

नगावदाहनि॥ॐ ह्यव दाय स्वाहा॥
 ॐ दं॥ॐ ह्यवि य स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यन
 य स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यी न व न्न य स्वाहा॥
 ॐ दं॥ॐ ह्यव क ष स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यमा
 य स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यजा य न य स्वाहा॥
 ॐ दं॥ॐ ह्यक न्दा स्य ४ स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्य
 श्री स्य ४ स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यवा नी त्व नी स्य ४
 स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यध व स्य ४ स्वाहा॥ॐ दं॥
 ॐ ह्यवि स्य ४ स्वाहा॥ॐ दं॥ॐ ह्यव दाय

मारुतैः ॥ यजमानरुक्मन्वीहि पाशवा
 ही निधायय ॥ यवा रुक्मिणीमर्पय
 वासुगसमिधुक् ॥ समिधुचरुतैयूष्य
 नक्रवक्रुक्मालिका ॥ मालायूष्यविः
 स्वादिनिधाय ॥ गगागुत्रयूजनैः ॥ उं गुर्व
 वाय्यय ॥ दमासनैः ॥ रुक्माद्यदि ॥ व
 क्रुक्मनीयजलं कान्मूकृष्टमूद्रिकाय
 रुमाननय ॥ ० ॥ उं सर्वलं कान्संयु
 कं कं कर्णमूद्रिकानिव ॥ कृत्तुलानिमूः
 कृत्तानिगुत्रस्य ॥ यनिगृष्टगां ॥ यथाय
 रुं रुद्रयं साममार्थसर्वसाधक ॥ गाम
 पाशुलिगानित्यं गुत्रस्य ॥ यनिगृष्टगां ॥
 आय ॥ इयं वक्त्या लं यशयोगधनानि
 व ॥ रुक्मगागुत्रयसादनसर्वकार्यव
 सिद्धिद ॥ यशोकथय ॥ आचार्यनृ
 हीत्याय ॥ ० ॥ उं ॥ दैरुवीति ॥ वीहि
 यूजनैः ॥ गायशाजय ॥ रुक्मरुक्मनज
 लन ॥ उं अग्नयवे ॥ नयायगिलाक
 गिसं कृत्यसिद्धि नमु ॥ ॥ गगावीक्रु
 गि ॥ उं रुक्मव ॥ स्व ॥ वक्र ॥ ० ॥ स्वाहा ॥

दलपञ्चगयन्त्रा ॥ नथेववृक्षापुष्पा
 नवदलाकपाल ॥ यग ४ पूर्वदिक्
 लङ्गा ॥ जयादि ४ ॥ असिगाहादि ४ ॥ वः
 काष्ठादि ४ ॥ गंगादि ४ ॥ एहरे ॥ नृत्त
 य ॥ अश्वत्थामादि ४ ॥ गणपुत्रयानिनी
 अश्वत्थामादि ४ ॥ अश्वत्थामादि ४ ॥
 नागयक्रयक्रवीशीलश्रीगणपति
 पाल ॥ गणेश, कोमारी, गणेशलिंग,
 निवर्गकि, कलिल, कममल्ल, यहि
 दानादि ॥ सर्वविगिलाङ्गनिदयाङ्ग ॥
 यद्वंशरावयद्वंश, त्वंशरावयद्वंशः
 न ॥ गितमाधवद्वयङ्ग एकत्वमिलिङ्ग
 नेङ्ग ॥ समिधमल्लयाङ्गद्वंशरावयद्वंश
 वयनहामयङ्ग ॥ पूर्वनस्थ ॥ गण ॥ सर्व
 षीयनिर्वाकावयङ्ग ॥ गितमाधवद्वयङ्ग
 ॥ ॐ पूर्वदिदीनि ॥ ॐ गितमाधवद्वयङ्ग

गता यथा कर्म का यथा ॥ य इमं लुप्यो
रुनवा ॥ नमो नमो लुप्यो ॥ मलुया ल
काले विमाने यामन कृणु ध्वमाता ॥
यवस्वस्तिकासन ॥ रुद्रय ॥ १० निक्षय ॥
चण्डिका ॥ अजय दिगि कलनी स्वायं

धवा (१) गमरा (२) दध्यर्ग निधाय ॥
 वाक् (१) नगुन नमस्का नादि न्यासादि
 अर्घ्याय पूजा ॥ वलिपदानं ॥ उं गम
 नांत्वा ॥ उं नमा वरुणाय ॥ उं घर्गं घ
 गपावान ॥ उं विष्णो गय ॥ उं आनी
 नियुक्तिः ॥ धूपदीपजापलक्षण ॥ वलि
 विसर्जनं ॥ स्नानमगुपयदकिं वकुम
 नवहिः क्रियते ॥ ॥ पूर्वदिक्कलन
 पूजनं ॥ उं नूं नूं नूं नूं नूं नूं नूं ॐ
 गिलाकपालमकुं नपूर्वादिभिर्नार्कः
 पूजा ॥ पूर्व ॥ उं कानसमूदाय ॥ उं स
 मूदा दूर्गमि मधुमा इंदान द्रया ० सुना
 सममृगत्वमानह ॥ घगस्यनामगुर्क
 यदस्ति जिह्वा देवानाममृगस्यनाहिः ॥
 १ ॥ आग्रय ॥ उं कानार्गुवाय ॥ उं प
 यः यथिया ॥ ॥ दकि (१) ॥ उं दधिस
 मूदाय ॥ उं समूदायत्वा वागायत्वा
 हा सलिलायत्वा वागायत्वा हा अना
 ध्यायत्वा वागायत्वा हा पुनिध्या
 यत्वा वागायत्वा हा अवस्यवत्वा वा
 गा यत्वा हा गिपिविद्यायत्वा वागाः

यस्वाहा ॥ ॥ नेष्टे ॥ उं सविस्मृदाः
 य २ ॥ उं दवन ॥ सविस्मृतिं अयस्वाहा
 गा वयं ॥ सहसस्य ॥ अहु ॥ ॥ ॥
 वान् ॥ उं सवा दकसमूदाय ॥ उं
 समूदं ज्ञासलितस्यमध्वाना पुनाय ना
 नविष्मना ॥ ॐ द्यायावजी वृष
 लाललाठ आयादेवी विरुमावयनु ॥
 १ ॥ वायव्य ॥ उं दहदिकसमूदाय ॥
 उं दवस्यत्वा ॥ ॥ ॥ उं रुव ॥ उं ॐ रुस
 मूदाय ॥ उं समूदत्वा नमना अस्वः
 कर्तव्यता ॥ ॥ ॥ धिवा अन्त उरु ॥ ॥
 गीयत्वा नजसिगस्तिवा ० समया मय
 रुमहिमा अवर्द्धन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सिधूसमूदाय ॥ उं समूदं गकुत्वा हा
 इने निरीगकुत्वा हा दव ० सविगार्ग
 कुत्वा हा मिग वरु ॥ ॥ गकुत्वा हा हा ना
 र्गकुत्वा हा कया ० सिगकुत्वा हा या
 वायुधिवीगकुत्वा हा या वायुधिवीग
 कुत्वा हा यर्गकुत्वा हा सामगकुत्वा हा
 र्निवेष्टानर्गकुत्वा हा मनामहादि
 यकुदिर्वर्गधूभागकुत्वा हा ॥ ॥ ॥
 धिवा रुग्मनाय वत्वा हा ॥ ॥ ॥ ॥

ना

रुच ॥ ॐ समुद्रं त्वानुमन्तं जलं नृ
 वक्रादिवा जलं नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ
 सिगच्छि वा ० समया मयस्क मरिषा ज
 वरुन ॥ ॥ यक्षमृग ॥ ॐ यय ॥ यथिया
 ॐ दधिवा ॥ ॐ गजसिंहुकमस्य मृ
 गमसि ॥ ॐ मधुवागा ॥ ॐ निवानामासि ॥
 ॐ गजान ॥ ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहा नमि कंग
 कस्वाहा दव ० सविगानं गच्छ स्वाहामि
 गावन्तो गच्छ स्वाहा हानां गच्छ स्वाहा
 कन्द्या ० सिगच्छ स्वाहा द्यावा पृथिवीं गच्छ
 स्वाहा यद्गच्छ स्वाहा सामं गच्छ स्वाहा दि
 व्यं नरुगच्छ स्वाहा निर्वेक्षानं गच्छ स्वा
 हा । मनामहा दिव्यकवि नक्षत्रभाग कुरु
 स्वकृतिं पृथिवीरुम्भनाय स्वाहा ॥ ॥
 श्री हि ॥ ॐ श्रीरुयधम ॥ ॐ स्वस्वकलगा
 स्तान ॥ ॥

गी ॥ धिदक ॥ ॐ यक्ष नयस वस्वनी ॥ ॥ स
 मृदादक ॥ ॐ समुद्रं जलं सलिलस्य मधो
 नाय नानायकुन विष्णो ना ॥ ॐ द्यावा वज्र
 कर्महा ललाट आयादवी निरुमावरुतु ॥
 ॥ ॥ वशीलं स्व ॥ ॐ अग्निना रुषज ॥ ॥ कृपा
 दक ॥ ॐ आया जस्मान् ॥ ॥ वशीलं स्व ॥ ॐ



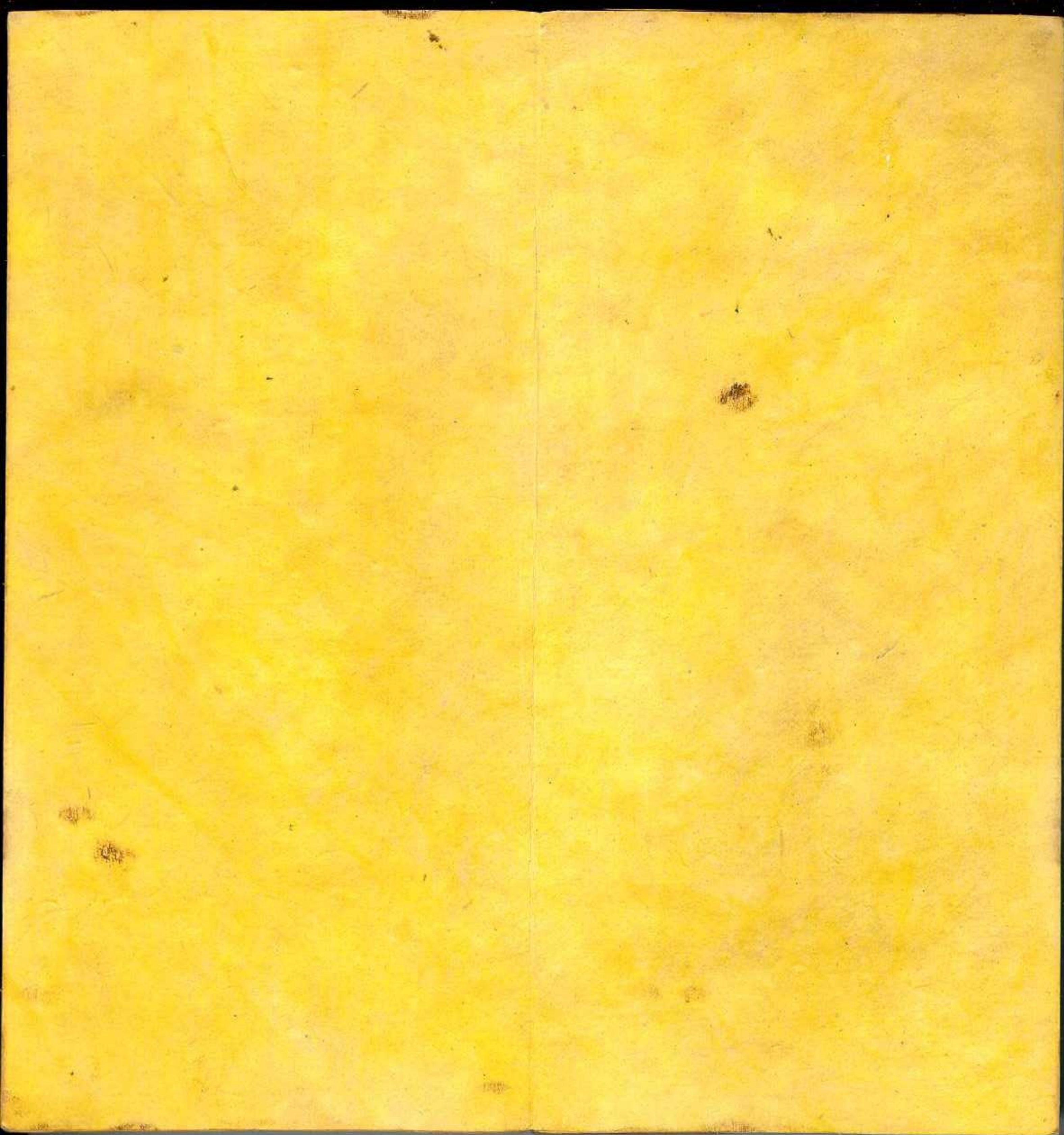




















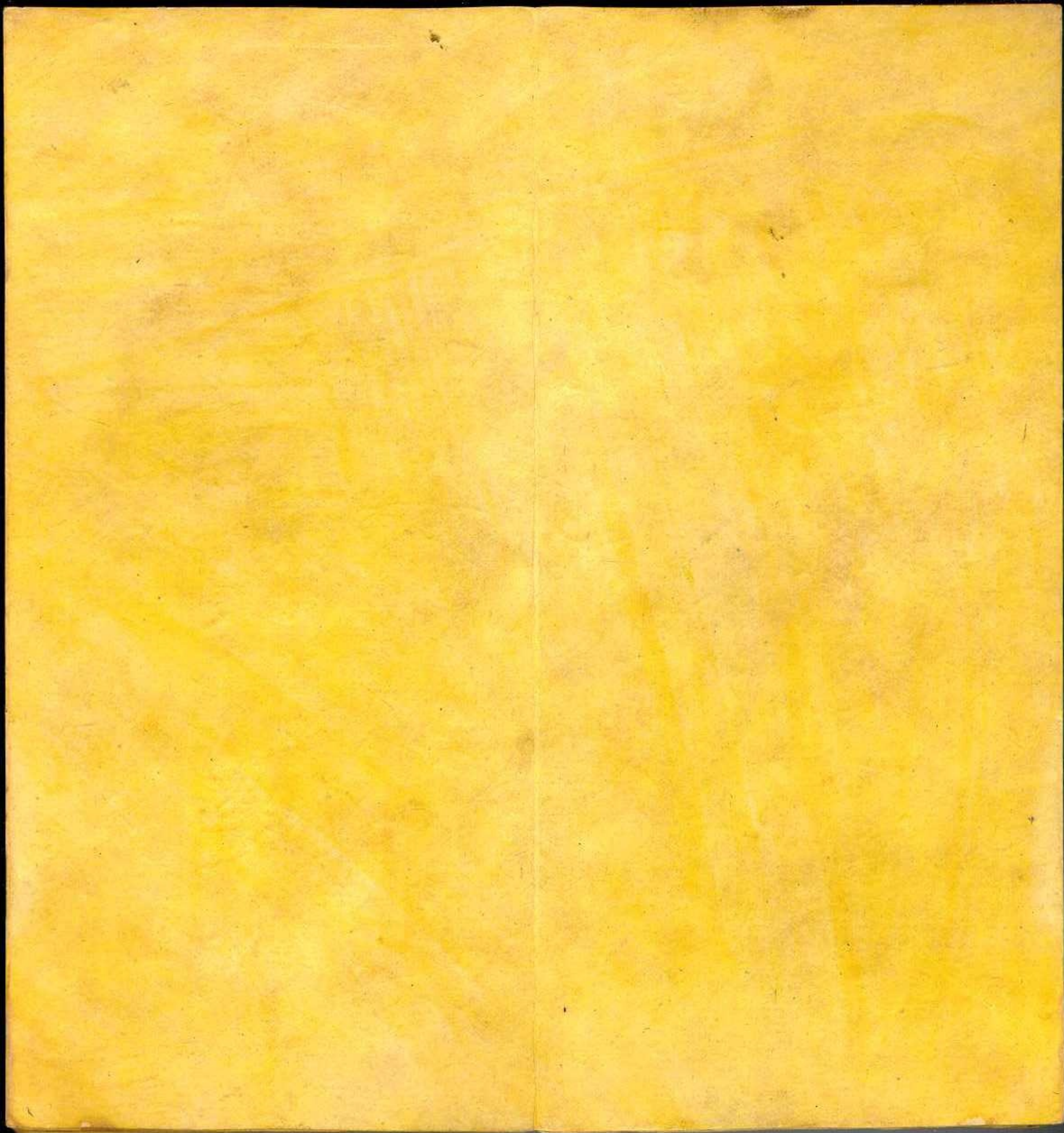


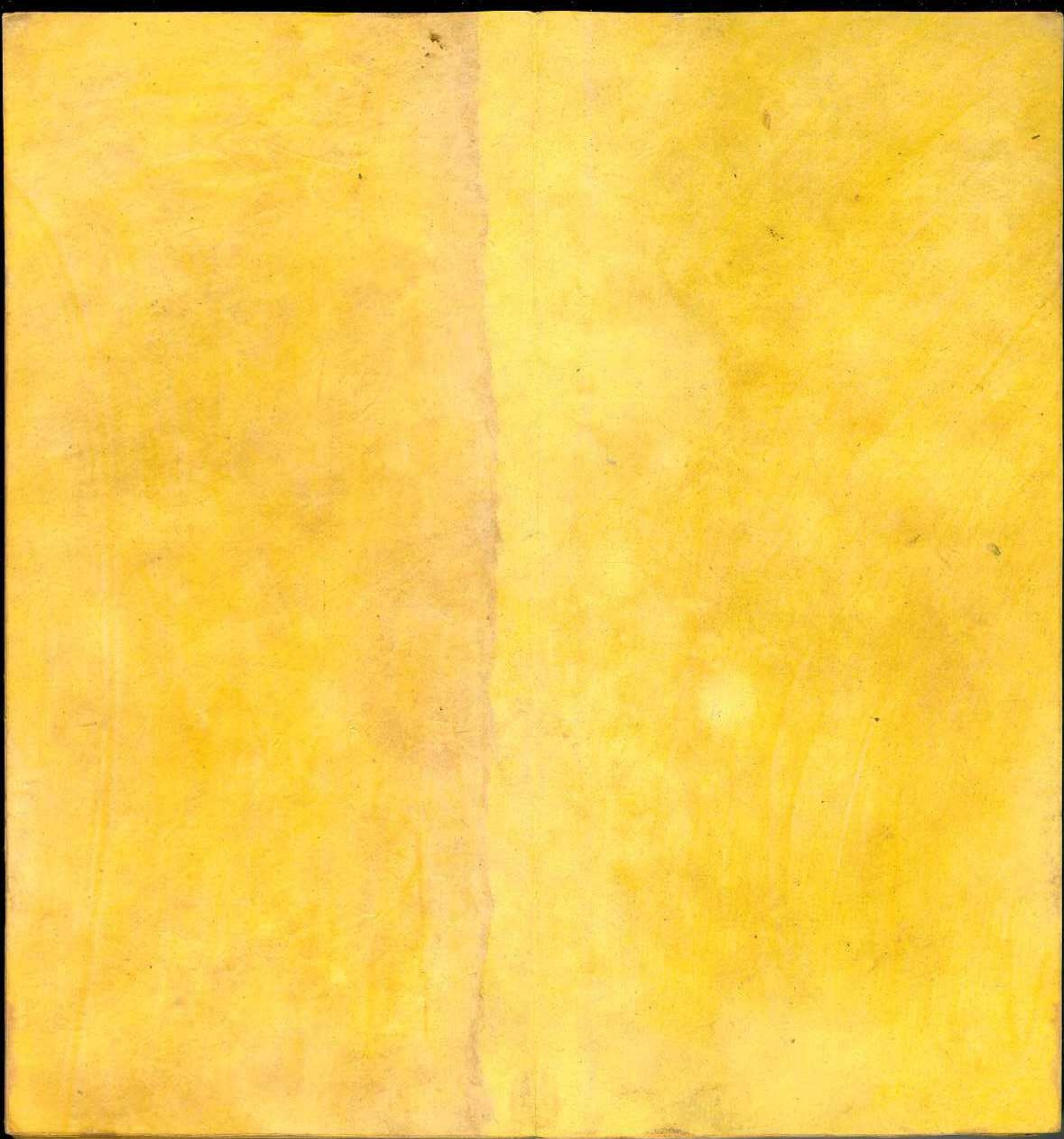


























ASHA ARCHIVES

3542

१ संवत् ७०१ अश्वि शुक्ल युगिय दायी ति १५ ॥ सामवा स अ ध कू दू ५ वी वाक्क पी दि वं ग ग इ व दि न शुभ ॥
 २ संवत् ७०१ नक्षत्रा र मा भ शुक्ल पक्ष दशम्या ति १५ शुक्ल वा स अ ध कू दू वा ग म क ग व वाल डा व न म
 हा ड य द व श डा स क र न भे द ६ की र्ति पू न डा न यु वि य ना स क ले ढ गा क यू डा वा न वा न स क ले ढ
 स ढ ख डा स डा व ला ग या रु ले या रु ले पू ल क डा व मा ग डा न इ पा न ध कू न डा ल ५ नि कू हा
 डा न गु लि ले ख सि र्थ थ डा ल डा का ख न द न स क ले ढ ला हा क इ डा ॥ शुभ ॥

१ गार्क व द्वा स ना द वी कि न न म क क र्थ यू गा । ग द्या र्ण ख ध ना वा भ म द कू च क व न
 प्र यी । का र्ति स्त्र र्थ स म र्ग म डा ग क का श्च ने र्म नि र्ग ॥ ना ना न त्वा दि र्म यू क्ता ना ना

ए न ग रू षि गी । ख क्का ल्म दि ग द्म धा ग के न वे ४ स रु र्म यू गा । कृ शा य क्र गु यी ० च
 गा तु वे नृ य ल्म रि गी ॥ ये सा क था पि नी द वी । वि ग क्का भ क र्थ पि यी । स र्च सि द्वि ग
 द्म धी गी स र्च द र्च न र्म ल्म गी ॥ स र्च नि न द म यी द वी स र्च त्म कृ ग र्म यू गा ॥ ना ऊ
 ना ऊ ध य नी द वी ४ म कू र्म स र्च सि द्वि र्ग ॥ ॥ र्च गु या ध्म न ॥ पु फ या य मा न ॥
 श्री न त्ते ध य न स दा भि त रू हा न स्य या सा दा ह्य क न अ नू क स्मा त ध्म न यु
 दा ध्म स्य र्ण दं स ध्म यू र्च क ग दू रु न वा क्क पी नो दि कू ४
 ग दी ना र्था ध्म ग कि र्क म डा स ना र्थ ० श्री ३ न त्ते ध य गो र्चि न क र्क ॥

४०
र्ययनाकसी

धर्वस्केन्दु

वनकी३१

अक्षि ति	ययोन्या १५	अयन २१	००न्द २२	सुय २३	सय २४	रुण २५	आका २६
विति २०							
अनन	२३	आय २४	अय २५	अय २६	सवि २७	२८	वृजा २९
भाम	३०	यथी ३१			विव ३२	३३	विगध ३४
रुल्लोट	३५	३६			स्थान ३७	३८	यस ३९
मखा	४०	नाजय ४१			रेधाक ४२	४३	गन्धर्व ४४
नाग	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
वाज माय	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८

विलिपि
४४

वगना
३९

चतुष्टयदं रुद्रः धात्रागष्टसो यती वतुत्रसीकृग कृप प्रस्र (भरय राडिग ॥ वृक्ष ॥ धननन न ग सिनको
 ॥ नखा समन्विन विपुः सखियदवृकोः स्तिगमव्यवगुव्यद ॥ गतसमं ग गो कृया वास्तुद वा वावस्ति गा ॥ अयोमा
 द्वियदः कृयो विवृस्वानद्वियदस्तथा द्वियदोमिगनामावगुव्यद्विबीधन ॥ वृक्ष ॥ धननन न दिक् कृा नयादि
 यदासना ॥ धोघोको ॥ नखो धवा यदाद्विद्विगुजाय न सविगात्रेवसा विगु ॥ नुत्रेव वृज्यं ग ॥ धा ॥ नाडय ॥
 वनूयधुआयवत्स आयनवव ॥ यकृन्ना रणनामा वकृमाचरुं ग प्रवव ॥ दोवा विकाथ ॥ धम ॥ मध्य नागादि ॥
 ति नवय साञ्जिद्वयदरुका ॥ वाव दि ॥ धा ॥ धम ॥ द्वियदरुका ॥ गो कृातया ॥ धा ॥ उग ॥ क्रमाग ॥
 ॥ धक्रामागवास्तु लेकृर्षी ॥ धर्वका र्यो सिर्कस्तु ॥ सिर्क ॥ सुदरं नवी ॥ जानगा ॥ जाननो वायि मर्मरु ॥ यदोर
 धग ॥ अथा नगागद ॥ भन गदा ॥ कि विनिदि ॥ धो ॥

ॐ नमो नारायणाय ॥ दशवर्ग क्रिया
 नमो नारायणाय नमो नारायणाय ॥ म
 वक्रगिलास्त्राय ॥ सुमन्त्र गिलास्त्राय
 मलुकाक ॥ उद्या गिलास्त्राय नासां स
 धा ॥ ग ॥ धा ॥ मा ॥ प ॥ धा ॥ स ॥ न ॥ स्त्रा ॥ दि ॥ उ ॥ ज्ञा ॥
 भ ॥ क ॥ व ॥ क्ता ॥ नी ॥ ला ॥ य ॥ त ॥ य ॥ ग ॥ धा ॥ नि ॥ नी ॥ ल
 धा ॥ उ ॥ का ॥ य ॥ वि ॥ धा ॥ ना ॥ स ॥ ब ॥ लि ॥ का ॥ न ॥ म ॥ लि
 गा ॥ मा ॥ धा ॥ य ॥ नि ॥ ला ॥ रु ॥ पि ॥ नी ॥ धा ॥ ला ॥ ग ॥ स्त्रा ॥
 स ॥ रु ॥ य ॥ द ॥ ल ॥ वि ॥ का ॥ र्ण ॥ वि ॥ रा ॥ य ॥ ना ॥ स ॥ र्क
 धा ॥ ॥ उ ॥ ड ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ दी ॥ क ॥ य ॥ रा ॥ का ॥ य ॥ रु
 ह ॥ क ॥ न ॥ ध ॥ ध ॥ न ॥ ॥ का ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ द ॥ द ॥ या ॥ य ॥ अ
 रु ॥ सा ॥ र्था ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ डी ॥ न ॥ नि ॥ व ॥ स ॥ र्ग ॥ र्ज ॥ नी
 र्था ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ डू ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ लि ॥ खा ॥ य ॥ म ॥ ध ॥ मा ॥ र्था ॥
 न ॥ म ॥ ४ ॥ डू ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ क ॥ व ॥ वा ॥ य ॥ अ ॥ ना ॥ मि ॥ का ॥ र्था ॥
 न ॥ म ॥ ४ ॥ का ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ न ॥ शा ॥ र्था ॥ क ॥ नि ॥ शा ॥ र्था ॥
 न ॥ म ॥ ४ ॥ ॥ व ॥ क्ता ॥ ना ॥ स ॥ ४ ॥ उ ॥ डू ॥ वे ॥ क ॥ र्था
 य ॥ ध ॥ र्वा ॥ व ॥ क्ता ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ का ॥ न ॥ र्वा ॥ सि ॥ हा ॥ य
 द ॥ कि ॥ र्वा ॥ व ॥ क्ता ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ क ॥ पि ॥ ला ॥ य
 य ॥ धि ॥ म ॥ व ॥ क्ता ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ र्था ॥ व ॥ ना ॥ रा ॥ य

उ ॥ रु ॥ न ॥ व ॥ क्ता ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ उ ॥ क ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥
 वे ॥ न ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ म ॥ ४ ॥ ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥
 स ॥ ४ ॥ का ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ द ॥ द ॥ या ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ की ॥ न
 म ॥ नि ॥ व ॥ स ॥ र्ग ॥ रा ॥ ४ ॥ डू ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ लि ॥ खा ॥ य
 व ॥ ध ॥ ॥ डू ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ क ॥ व ॥ वा ॥ य ॥ डू ॥ ॥ का ॥ न
 म ॥ ४ ॥ न ॥ शा ॥ र्था ॥ वि ॥ ध ॥ ॥ डू ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ दी ॥ क ॥ य
 रु ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ रु ॥ ॥ ॥ अ ॥ न ॥ ना ॥ र्वा ॥ य ॥ रु ॥
 रु ॥ य ॥ ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ रु ॥ ॥ नि ॥ ला ॥ ध ॥ र्वा ॥ ॥ उ
 म ॥ रु ॥ का ॥ य ॥ २ ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ उ ॥ का ॥ ला ॥ नि ॥ रु ॥
 य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ स्वा ॥ पि ॥ स्त्रा ॥ न ॥ ॥ उ ॥ क ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४
 ना ॥ र्वा ॥ ॥ उ ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ ग ॥ क ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ ना ॥ र्वा ॥
 ध ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ द ॥ क ॥ र्वा ॥ य ॥ ॥ उ ॥ रु ॥ ना ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४
 ॥ वा ॥ म ॥ र्वा ॥ य ॥ ॥ उ ॥ वे ॥ ना ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ द ॥ कि ॥ र्वा
 या ॥ ॥ उ ॥ वे ॥ र्वा ॥ य ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ वा ॥ म ॥ या ॥ ॥
 उ ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ व ॥ क्ता ॥ ॥ उ ॥ अ ॥ रु ॥ ना
 य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ धा ॥ नी ॥ ॥ उ ॥ अ ॥ वे ॥ ना ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४
 द ॥ कि ॥ र्वा ॥ या ॥ ॥ उ ॥ अ ॥ र्वा ॥ य ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥
 वा ॥ म ॥ या ॥ ॥ उ ॥ स ॥ क ॥ पि ॥ ला ॥ य ॥ धा ॥ र्वा ॥ स ॥ रु
 स ॥ रु ॥ र्वा ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥ ॥ न ॥ व ॥ क्ता ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ४ ॥

उत्तमवीरिनेयुनय ॥ मध्यसर्वमिष्ट
 युनय ॥ यथागकिस्ववृष्टिकाव ॥ ग
 न ॥ युजने ॥ उं डीस ॥ नां नद्यायेनम ॥
 डीस ॥ मृधमायनम ॥ डीस ॥ रां रुडा
 येनम ॥ डीस ॥ मृनां येनम ॥ डीस
 ॥ जां ज्यायेनम ॥ डीस ॥ वे नाग्वा
 यनम ॥ डीस ॥ विं विकायनम ॥ डीस
 ॥ ले ने ग्वयायनम ॥ आनयादि ॥
 नार्क ॥ ॥ डीस ॥ नां नद्यायेनम ॥ डीस
 ॥ मृधमाय ॥ डीस ॥ रां रुडाये ॥
 डीस ॥ मृधमाय ॥ डीस ॥ जां ज्या
 ये ॥ डीस ॥ वे नाग्वाये ॥ डीस ॥
 विं विकाये ॥ डीस ॥ ले ने ग्वयाय
 ॥ ॥ पृथ्वीरुनार्क ॥ ॥ मध्ययुजने ॥
 उं डीस ॥ मृधमाय ॥ डीस ॥ आधन
 कथ ॥ डीस ॥ अनकासनाय ॥ डीस
 ॥ कीना र्वाय ॥ डीस ॥ कीना र्वाय
 नम ॥ डीस ॥ रुक्याय ॥ डीस ॥ नासा
 ये ॥ डीस ॥ यमाय ॥ डीस ॥ यमाय ॥
 डीस ॥ कर्णनाय ॥ डीस ॥ कर्णनाय ॥

डीस ॥ गत्रुजसनाय ॥ ॥ गस्था
 पविपिलिकास्त्राय ॥ डीस ॥ आ
 नन्दकन्याय ॥ डीस ॥ सर्वविनालाये
 ॥ डीस ॥ सर्वतत्वकमलाय ॥ डी
 स ॥ यद्विमययय ॥ डीस ॥ वि
 कायमयकनय ॥ डीस ॥ यय
 गद्विमयकनिकाये ॥ डीस ॥ अ
 अर्कमगुलाय ॥ डीस ॥ डं साममगु
 लाय ॥ डीस ॥ मं वक्रिमगुलाय ॥
 डीस ॥ सं सत्वाय ॥ डीस ॥ नं नजसं ॥
 डीस ॥ गं गमसुमादात्मन ॥ डीस ॥
 आं आत्मन ॥ डीस ॥ अं अनात्म
 न ॥ पविम ॥ डीस ॥ पं पनमात्मन
 ॥ ॥ डीस ॥ ॥ डीस ॥ ॥ डीस ॥ ॥
 ॥ डीस ॥ मां मायागलाय ॥ पादो ॥
 डीस ॥ कालगलाय ॥ नाशो ॥ डीस ॥
 विं विद्यागलाय ॥ रुदि ॥ डीस ॥ पं प
 नगलाय ॥ निवसि ॥ शिका (स) दकि
 गवरुन ॥ डीस ॥ विमलाये ॥ डीस ॥

उत्कर्षि (ले) २॥ डौस ४ इनाये २॥ डौस ४
 क्रियाये २॥ डौस ४ यागये २॥ डौस ४ प
 काये २॥ डौस ४ सत्याये २॥ डौस ४ ००
 मनाये २॥ डौस ४ अनूयहाये २॥ म
 ॥ उं नभारुगवा विष्णु वसव रुगात्म
 न वासुदवाय सवस्मि स याग यद्य
 पी ० अत्मन नमः ॥ षष्ठ (स) नयुजनं ॥
 न्यास सर्व आत्मलीनं ॥ गण दर्वका
 य ॥ ॥ गण मूला वाय ४ दवा (ग) गवा
 अर्घ्य पाण्डु समन्वित ॥ षष्ठ न्यास ॥
 दवा (ग) धनी ॥ याग यति छाकं कुर्यात् ॥

मधुसूत्र

रवा सुयुजा ॥ कृणुति का विप्रिहाम ॥ यथ कर्मस ॥ नकाणी काष्ठ पुजनं ॥ सम
 र्मिका यथ ॥ पीग वधू मृत्तिका पुत्रिय ॥ पटंग वरु सिंग वधू ३५ कृष्णि
 धन रुयार्क कि विगाय ॥ पटवो सौ वाय ॥ काग वरु नाका यो सुयुग वाग
 काणी काष्ठ कायथ ॥ काभय निंक यथ व त्रि वाय व ग सिंधु खानग ॥ नका
 णी काष्ठ कुल निर्मकनी ॥ व त्रि ॥ अग्नि नो रुयका ॥ नकाणी काष्ठ सुयु
 दी ॥ उं क ॥ अस्त्राय रुट ॥ समीकनदी ॥ उं वीं रुट दया यन म ॥ गाठनं रुट ॥
 अस्त्राय रुट ॥ लेपनी ॥ उं वीं कव वाय रुट ॥ अर्घ्य दका सुयुग ॥ यथ मृग
 स्नानी ॥ जल स्नानी ॥ वदनादि वासुका दना नदी गय ॥ खनका ठ विप्रिहका

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

[The page contains handwritten text in Devanagari script, which appears to be a continuation of the previous page's content.]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनि-
 शिष्यं त्वमाह वीर्यवान् ॥ इति श्रुत्वा तस्मात्
 प्रह्लादश्चैव तदात्मकम् ॥ संपश्यन् महाबा-
 हू नन्दितः प्रह्लादस्य च ॥ इत्युवाच धर्म-
 ज्ञानविभक्त्या युतः ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता-
 राधेयसंहितायां अष्टादशोऽध्यायः समाप्तः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १० ॥
 श्रीकृष्णभक्त्यो नमः ॥ ११ ॥
 श्रीगुरुभक्त्यो नमः ॥ १२ ॥
 श्रीगणेशभक्त्यो नमः ॥ १३ ॥
 श्रीविष्णुभक्त्यो नमः ॥ १४ ॥
 श्रीशिवभक्त्यो नमः ॥ १५ ॥
 श्रीब्रह्मभक्त्यो नमः ॥ १६ ॥
 श्रीमहेश्वरभक्त्यो नमः ॥ १७ ॥
 श्रीनारायणभक्त्यो नमः ॥ १८ ॥
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १९ ॥
 श्रीकृष्णभक्त्यो नमः ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १० ॥
 श्रीकृष्णभक्त्यो नमः ॥ ११ ॥
 श्रीगुरुभक्त्यो नमः ॥ १२ ॥
 श्रीगणेशभक्त्यो नमः ॥ १३ ॥
 श्रीविष्णुभक्त्यो नमः ॥ १४ ॥
 श्रीशिवभक्त्यो नमः ॥ १५ ॥
 श्रीब्रह्मभक्त्यो नमः ॥ १६ ॥
 श्रीमहेश्वरभक्त्यो नमः ॥ १७ ॥
 श्रीनारायणभक्त्यो नमः ॥ १८ ॥
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १९ ॥
 श्रीकृष्णभक्त्यो नमः ॥ २० ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ३ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ४ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ५ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ६ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ७ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ८ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ ९ ॥
 कृष्णाय नमः ॥ १० ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

61145555

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[illegible]

515

[illegible]

۱۵۴

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

वसिष्ठ

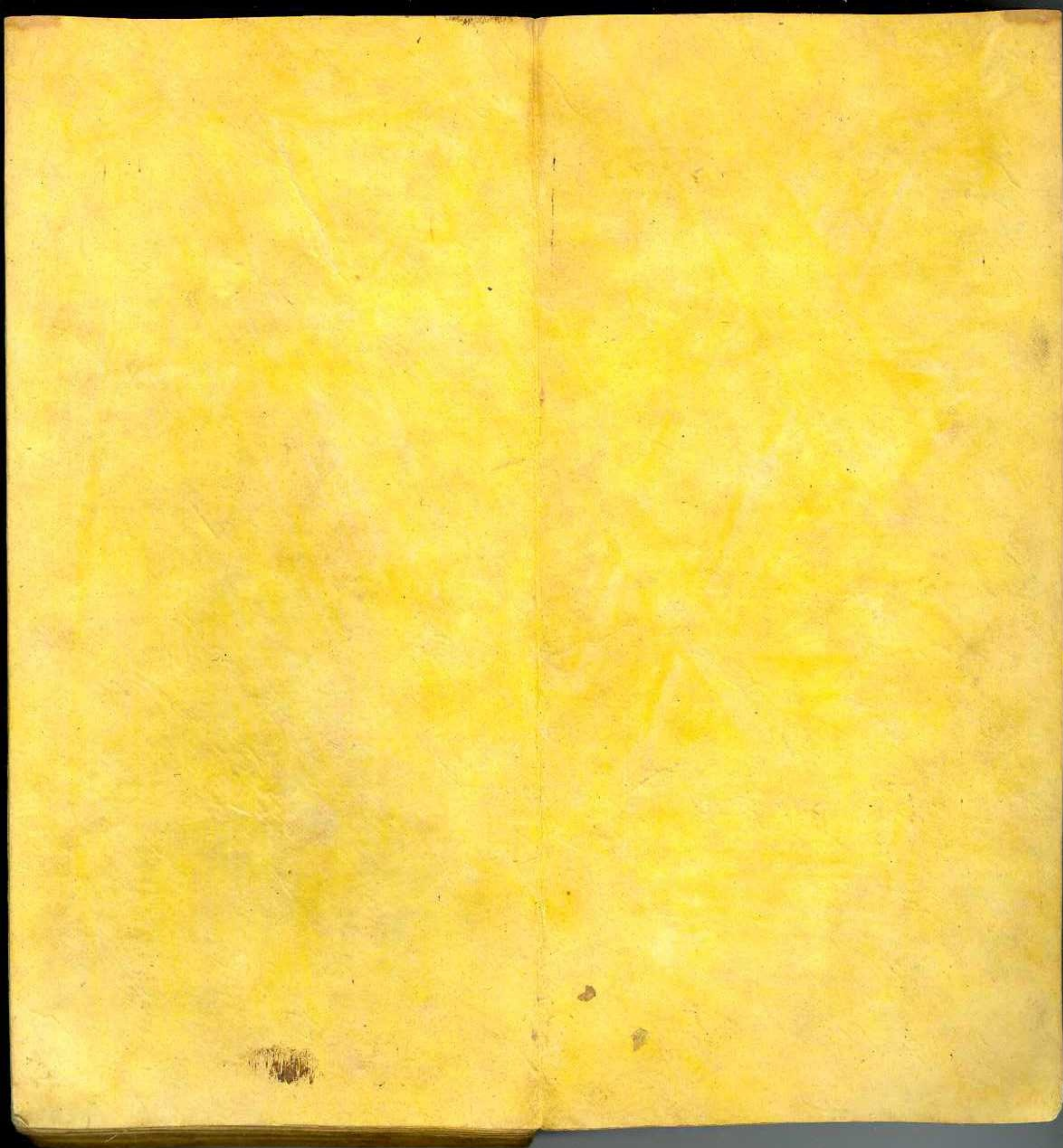
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ २ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ३ ॥
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमांश्चरितान् ॥ ४ ॥
 सौमित्रान्द्रुपामण्युपमांस्तदा ॥ ५ ॥
 आर्जुनस्य द्रुपदस्य च तदा ॥ ६ ॥
 पाण्डुपुत्रोत्तमो द्रुपदो वीरवान् ॥ ७ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ ८ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ ९ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १० ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ ११ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १२ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १३ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १४ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १५ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १६ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १७ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १८ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ १९ ॥
 द्रुपदो वीरवान् ॥ २० ॥

[illegible]

क्रूर अमृकस्य गमिर्न क्रूर रव र लैर स्वा हि र ऊग नमहा काना विपग यमहा वसिष्ठ
 क्रूर स्वाहा ॥ ऊग नया ॥ वमि सिव सि नमः ॥ अवाहनदि ॥ आपराज ॥ अगम भदि ॥ पशु
 याग ॥ गण्य ॥ धवी आभी द्याद ॥ अहिषकादि ॥ सूर्य साहि ॥ ॐ गिरु न सिद्धि दि द यद्व
 नस्व स्य विविध स माफ ॥ ॥ श्री नाम न य ग सि सि र्म ॥ ॥ श्री धव द वी श्री नि न सु ॥ ॥ एरु ॥

प्रतिष्ठा

१
 रुद्र नमा विष्णवे ॥ उकाद गी वि ग वि ग वि ॥ द वत्मान न द व द ग वि या द व जी व न्यास ॥ ग
 धन कि न हा न द व द रु न आ रु सि स र्व वा द र्व व ॥ गग व गा र्व न अ र्घ्य प र्क गी धन क ॥
 गग द्वा द ग स मि ध वि ग व हा म ॥ उर्की स ८ क ग वा य स्वाहा ॥ लं अ स्वाहा ॥ उ प्रि य स्वाहा
 ॥ वट व रु ॥ उ प्र हा य ग न ॥ १ ॥ उर्की स ८ ना न य ग य स्वाहा ॥ उ वा गी भ र्घ २ ॥ उ स न स
 खि २ ॥ व न हा ग ॥ उ अ य र्क वा ॥ २ ॥ उर्की स ८ मा ध वा य स्वाहा ॥ उ का र्खि २ ॥ उ दा र्खि २ ॥ इ
 म न ॥ उ उ द र्घ ॥ ३ ॥ उर्की स ८ ग वि न य स्वाहा ॥ उ द्वि या यि २ ॥ उ का ना यि २ ॥ य सा भ
 ॥ उ ॐ स न्द वा ॥ ४ ॥ उर्की स ८ वि द्र व स्वाहा ॥ भ र्खि २ ॥ उ दा र्खि २ ॥ अ पा मा र्ज ॥ उ उ द र्घ
 स्वा ॥ ५ ॥ उर्की स ८ म ध स द न य स्वाहा ॥ उ ध र्खि २ ॥ उ वि ध र्खि २ ॥ अ र्क ॥ उ अ द र्घ ॥ ६ ॥
 उर्की स ८ वि द्र क मा य स्वाहा ॥ उ ॐ क र्खि २ ॥ उ अ गी क र्खि २ ॥ र व दि न ॥ उ अ नि र्क र्को ॥



नञ्जैवसंशीकृतयाष्टवंगवगीष्टरूपनाकात्मिकाशीसिद्धिः यन्मायनारुणवगीनिष्ठा
सदायाष्टमा ॥ क्रीकानैष्टजगत्कनकनलोऽसिरावकस्तपनाहवत्तुंनरसंयुगत्वहित
यानादात्मिकानोदगां निष्ठा निर्विषया निर्व्याधनदाकावा नृरावा नहिसर्वज्ञादिगुणैर्व्यनीदि
ऊयगीमकुप्यनीमाष्टका ॥ उनामहंसनिसनादिगीकुपेया मकै ननु नवनमकुसमूहवाच्यी । ध
संयनीयकलबावनष्टयादागसोरायका किधनधन्ययदाजयकि ॥ ६० ॥ सिद्धिस्तस्मैस्तव ॥

श्रीकीर्तनसोई श्रीकीर्तनी कनः लकी रुमकर लकी सकलकी कीर्तनसोई श्रीकीर्तनी ॥

ॐ ह्रीं क्लीं वसो ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं नमः शिवाय नमः

[illegible]

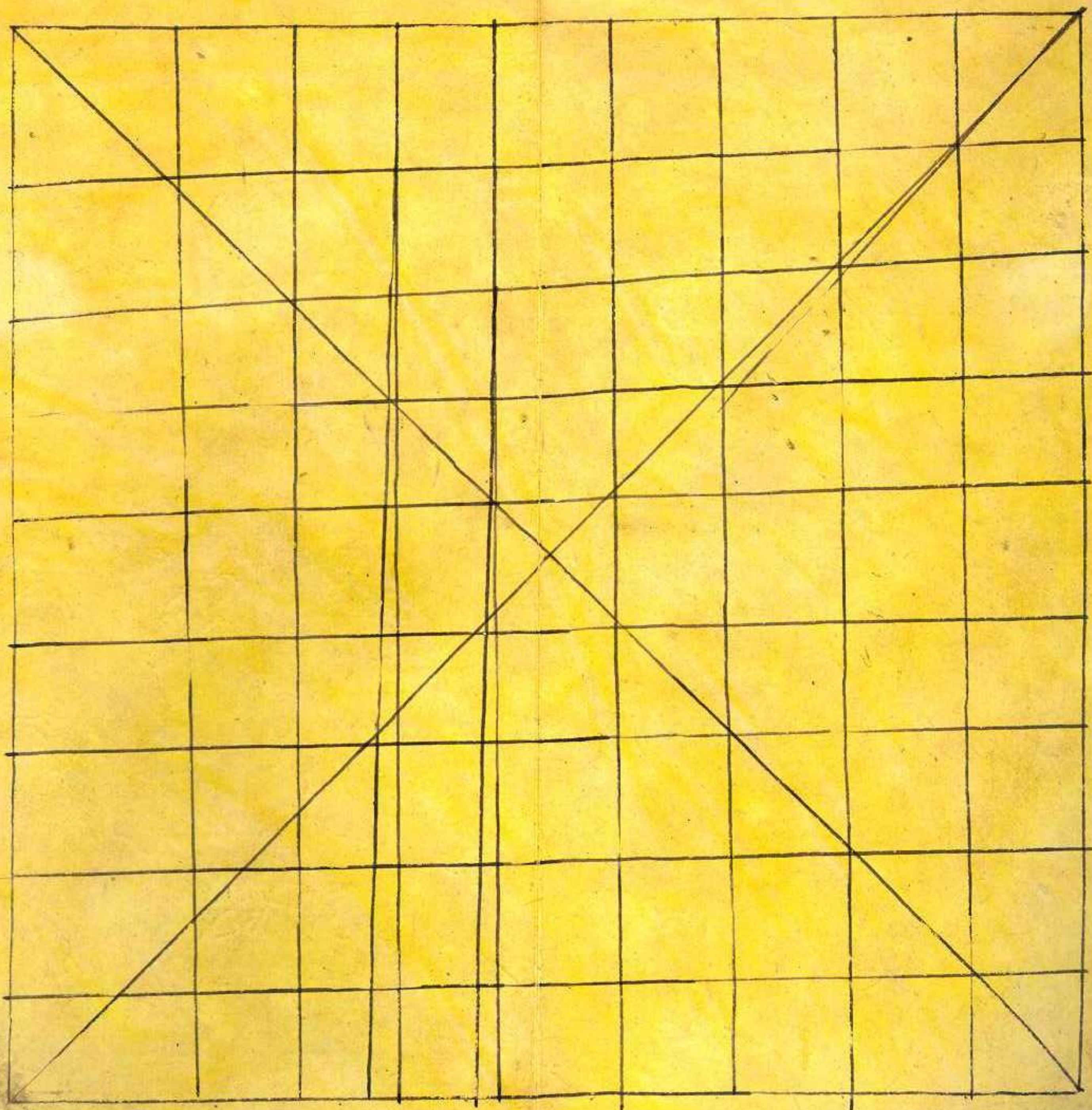
लेनवायवलि॥ इदं अथानअभाधवनदविचवेन्नदीगकिसहिगायकुमरेनवायवलि॥
 ३ अथानअभाधवनदविचवागारागकिसहिगायउमरुनेनवायवलिं८ क्र२॥ ३ अथानअ
 भाधवनदविचमारुत्रीगकिसहिगायकयालहेनवायवलिं८ क्र२॥ ३ अथानअभाधवनद
 विचवाप्रभुगकिसहिगायरीषणहेनवायवलिं॥ ३ अथानअभाधवनदविचमरालत्रीग
 किसहिगायसीरानमरानवायवलिं८ क्र२ इदं२ रुद्रस्वार॥ ३ अथं८ वं८ गं८ यं८ रं८ रुद्रकादिअरु
 रुद्रयालायवलिं८ क्र२ इदं२ रुद्रस्वार॥ ३ वां८ वां८ दं८ दं८ वद्रकनाथरुद्रयालकविलज्जटारानवः
 लिं८ क्र२ इदं२ रुद्रस्वार॥ ३ अं८ कं८ दं८ रुद्रस्वार॥ ३ नरुद्रयालमरुहेनवद्वयवलिं८ क्र२
 इदं२ रुद्रस्वार॥ ३ थां८ यो८ दं८ यो८ सवथा ३ निचवलिं८ क्र२ इदं२ रुद्रस्वार॥ ३ रुद्रं८ सिद्धिवा
 म्रभुवलिं८ क्र२ इदं२ रुद्र ३ स्वार॥ ३ मं८ गी८ दं८ मं८ मरुगणपायवलिं८ क्र२ ३ इदं२ रुद्र
 स्वार॥ ३ इदं८ कनदीनममनाविपगयवलिं८ क्र२ ३ इदं८ ३ रुद्रस्वार॥ जाय॥ १०६॥ १०७॥
 १०॥ १०८॥ १०९॥ ११०॥ १११॥ ११२॥ ११३॥ ११४॥ ११५॥ ११६॥ ११७॥ ११८॥ ११९॥ १२०॥

2

[illegible]

कनकजनागया॥ दधीत्यधवने॥ गतिस्वयं वदया वदय नमः वनी नूवजस विद्वा कथिशावनः
धकच्छयमज्ञानस्याननया वधेधमूलमकुन धवमजसुस्थाननच्छय॥ धनज्वावरुनधवमज
सजवलाहगनधिस्यंगयाव॥ श्रीसर्वर्ग॥ इत्युत्तामूरु॥ यासापयायनादवीधवनीस्वस्वद्विधि
ज्वायाने विरुभमाम॥ अक्षरिपवमधवि॥ धन॥ पप्रथगासनासीना ववदारुयया जिनी॥ ना
नान्यधनीधनी नानागमि क॥ अमरिगा॥ वरुवकावक्रुजावक्रुवपा मरुत्तना॥ विधवदूया
मरुत्तानी नालकीचिगमद्विजा॥ यधमिमगदूया वामरालनी निरुस्येवग॥ सिगरावन्दसद
धं पप्रवक्रातिरावनी॥ दगदाई लुसहिगी नानादूधकनीयगा॥ वक्रान्धमवनीधवीस्मयः
सुद्वस्वयदा॥ विनामगिनिरीधवी विनिगधरुनयदा॥॥ अवाहनदिमद्व॥॥ पाशाद्याच
मनीयादिकीनम॥ वन्दनसिन्दूवदूधधुपदीपंदन॥॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ मरुत्रास
नायनम॥ सुस्वमकुनस्वयान्तु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥
इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥ इत्युत्तामूरु॥

[illegible]



अथ	तर्जनी	गुल	विला	गुल	साम	धौ	वदल	विष्ण	दाय	लने	रूप	कोलिक	क	अथ
बाहु	गाय	का	बला	ताय	नकक	नक	ना	रुनि	वाह	नील	पीत	पय	पय	अथ
वकु	नाला	पीतय	सुभा	धक	मकुन	पम	ग.पय	वकु	रकु	मकु	कान	पय	पय	अथ

अथ	तर्जनी	गुल	विला	गुल	साम	धौ	वदल	विष्ण	दाय	लने	रूप	कोलिक	क	अथ
बाहु	गाय	का	बला	ताय	नकक	नक	ना	रुनि	वाह	नील	पीत	पय	पय	अथ
वकु	नाला	पीतय	सुभा	धक	मकुन	पम	ग.पय	वकु	रकु	मकु	कान	पय	पय	अथ

अथ	तर्जनी	गुल	विला	गुल	साम	धौ	वदल	विष्ण	दाय	लने	रूप	कोलिक	क	अथ
बाहु	गाय	का	बला	ताय	नकक	नक	ना	रुनि	वाह	नील	पीत	पय	पय	अथ
वकु	नाला	पीतय	सुभा	धक	मकुन	पम	ग.पय	वकु	रकु	मकु	कान	पय	पय	अथ

उप

भक्तिकवि

अथ	तर्जनी	गुल	विला	गुल	साम	धौ	वदल	विष्ण	दाय	लने	रूप	कोलिक	क	अथ
बाहु	गाय	का	बला	ताय	नकक	नक	ना	रुनि	वाह	नील	पीत	पय	पय	अथ
वकु	नाला	पीतय	सुभा	धक	मकुन	पम	ग.पय	वकु	रकु	मकु	कान	पय	पय	अथ

पञ्चम

